7

मलिकिसिदक की अद्‌भुत याजकाई

(7:1-28)

मलिकिसिदक का परिचय पहले ही दे देने के बाद (5:6, 10; 6:20) लेखक मलिकिसिदक की समानताओं की विस्तृत चर्चा में चला गया। उसका बल मलिकिसिदक पर नहीं बल्कि मसीह पर ही है। मसीह मलिकिसिदक से मेल खाता नहीं, "मलिकिसिदक प्रभु यीशु से मेल खाता है।"[1]

परमेश्वर के सामने मलिकिसिदक का असाधारण खड़ा होना उत्पत्ति 14:17–20 में बताया गया है और उसकी याजकाई का उल्लेख भजन संहिता 110:4 में है। इस असाधारण व्यक्ति के बारे में पुराने नियम में और कहीं हीं मिलता और नये नियम में केवल इब्रानियों की पुस्तक में मिलता है।

इब्रानियों की पुस्तक में पवित्र शास्त्र का उद्धरण हमें यह समझने में सहायता करता है कि पुराना नियम वास्तव में मसीह–केन्द्रित है।[2] मलिकिसिदक की याजकाई से मसीह की याजकाई की भूमिका को समझने में सहायता मिलती है। नई याजकाई उस रहस्यमय प्राचीन याजक/राजा के "नमूने के अनुसार" बताई गई है; दोनों याजकाइयों में एक *समानता* है जिसे लेखक समझाना चाहता था।[3] "ऐसा कोई दृष्टांट नहीं हो सकता था जो अपने आप में अनन्त हो, क्योंकि तब तो किसी के पास वास्तविकता होनी थी न कि दृष्टांत।"[4] लेखक पुराने नियम से दृष्टांतों की सहायता के बिना मसीह की उच्च याजकाई के इब्रानियों के प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकता था।

लेखक पाठकों को यीशु अपने प्रभु के सम्बन्ध में "अन्न" की इस अवधारणा में आकर अपने आत्मिक आलस्य को दूर करने में सहायता कर रहा था। 5:11—6:8 वाली डांट से उन्हें मसीह की उच्च याजकाई के विषय पर ध्यान देने के लिए आग्रह होना चाहिए था। अपनी तुलना को पूरा करने के लिए लेखक ने उत्पत्ति 14 की पृष्ठभूमि और भजन संहिता 110:4 में मसीहा की कड़ी के दोनों विवरणों की आवश्यकता थी।

अब्राहम मलिकिसिदक से कम था जिसने मसीह की याजकाई के लिए अग्रणी के रूप में काम किया। यह सच्चाई लेवी और हारून के साथ साथ अब्राहम पर मसीह की श्रेष्ठता को दिखाती है। लगता है कि इब्रानियों के पुस्तक के पाठकों ने पहले परमेश्वर की प्रेरणा पाए किसी भी प्रवक्ता या लेखक से मसीह की ईश्वरीय उच्च याजकाई के बारे में पहले नहीं सुना था। 7:1 की वाक्य रचना पर ध्यान दें। स्पष्टतया उन्होंने उस यीशु को जिसे वे जानते थे भजन संहिता 110 वाले मसीहा से नहीं जोड़ा था। परन्तु मलिकिसिदक की और मसीह की दोनों याजकाई अपने न खत्म होने वाले स्वभाव के साथ साथ धार्मिकता और शान्ति के मेल की अपनी विशेषताओं से एक दूसरे के बहुत निकट हैं।

अब्राहम और मलिकिसिदक (7:1-10)

[1]यह मलिकिसिदक शालेम का राजा, और परमप्रधान परमेश्वर का याजक, सर्वदा याजक बना रहता है: जब अब्राहम राजाओं को मारकर लौटा जाता था, तो इसी ने उस से भेंट करके उसे आशीष दी। [2]इसी को अब्राहम ने सब वस्तुओं का दसवां अंश भी दिया: यह पहिले अपने नाम के अर्थ के अनुसार, धर्म का राजा, और फिर शालेम अर्थात शान्ति का राजा है। [3]जिसका न पिता, न माता, न वंशावली है, जिसके दिनों का न आदि है और न जीवन का अन्त है; परन्तु परमेश्वर के पुत्र के स्वरूप ठहरकर वह सदा के लिए याजक बना रहता है।

[4]अब इस पर ध्यान करो कि वह कैसा महान था, जिसका कुलपति अब्राहम ने अच्छे माल की लूट का दसवां अंश दिया। [5]लेवी की सन्तान में से जो याजक का पद पाते हैं, उन्हें आज्ञा मिली है, कि लोगों, अर्थात अपने भाइयों से चाहे, वे अब्राहम ही की देह से क्यों न जन्मे हों, व्यवस्था के अनुसार दसवां अंश लें। [6]पर इसने, जो उनकी वंशावली में का भी न था अब्राहम से दसवां अंश लिया और जिसे प्रतिज्ञाएं मिली थीं उसे आशीष दी। [7]इसमें संदेह नहीं कि छोटा बड़े से आशीष पाता है। [8]और यहां तो मरनहार मनुष्य दसवां अंश लेते हैं पर वहां वही लेता है, जिसकी गवाही दी जाती है, कि वह जीवित है। [9]तो हम यह भी कह सकते हैं कि लेवी ने भी, जो दसवां अंश लेता है, अब्राहम के द्वारा दसवां अंश दिया। [10]क्योंकि जिस समय मलिकिसिदक ने अपने पिता से भेंट की, उस समय यह अपने पिता की देह में था।

आयत 1. आयतें 1 और 2 **शालेम का राजा** से सम्बन्धित विवरण को संक्षिप्त करती है। उत्पत्ति 14 कोई परिचय नहीं देता और न उसकी पृष्ठभूमि की कोई जानकारी, न ही इस अध्याय में भजन संहिता 110:4 के उद्धरण को छोड़ कोई और जानकारी दी गई है। क्या केवल वही ऐसा **याजक**/राजा था या इस नमूने के अनुसार कोई और भी था? मलिकिसिदक और अब्राहम के समय में अधिकतर संसार मूर्तिपूजक और अनैतिक था, परन्तु शालेम की तरह निश्चय ही धार्मिकता के और भी स्थान थे।

इब्रानी भाषा में ''मलिकिसिदक'' का मूल अर्थ है ''मेरा राजा धर्मी है'' (देखें आयत 2, ''धार्मिकता का राजा'')। *Melchi* (मलकि) शब्द *melek* से निकला है जिसका अर्थ है ''राजा,'' *zedek* (सिदिक) शब्द *tsaddiq* से निकला है जिसका अर्थ है ''धार्मिकता।''[5] जकर्याह 9:9, 10 को पूरा करने के रूप में मसीह ने ''जाति जाति से शान्ति की बातें'' करनी थीं और ''धर्मी'' होना था, जो धर्मी शासन का संकेत देता है। उसने ''धर्मी अंकुर'' होना था, ''राजा बनकर बुद्धि से राज'' करना था ''और अपने देश में न्याय और धर्म से प्रभुता'' कर सकनी थी। उसने यहूदा का उद्धार करना था और अपने सिंहासन पर राजा और याजक के रूप में काम करना था (यिर्मयाह 23:5, 6; जकर्याह 6:12, 13)।

''शान्ति'' के लिए इब्रानी शब्द के समान ''शालेम'' (देखें आयत 2) भजन संहिता 76:2 में सिय्योन से मिलाया गया है। जोसेफस और मृत सागर के पत्रों ने इस नगर को यरूशलेम

के रूप में दिखाया। मलिकिसिदक मसीह का प्रतीक था जिस ने सच्ची शान्ति लानी थी–केवल युद्ध से बचाव ही नहीं बल्कि परमेश्वर की ओर से भीतरी शान्ति लानी थी। ''मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता'' (यूहन्ना 14:27)।

पुराने नियम का कोई भी प्रमाण यह सुझाव नहीं देता कि मलिकिदिक एक साधारण व्यक्ति से बढ़कर था। यह उसकी पहचान की कुछ अवास्तविक कल्पनाओं को निकाल देता है। लगता है कि पवित्र आत्मा ने उसके इतिहास पर पर्दा डाल दिया, जिस ने उसे जन्म और मृत्यु के सम्बनध में मसीह का दृष्टांत या रूप बना दिया। उत्पत्ति 14 इस याजक के मसीहा के लिए व्यक्ति/रूप होने का कोई संकेत नहीं देता, परन्तु भजन संहिता 110:4 उसके भविष्यद्वाणी के संकेत को दिखाता है। पतरस ने भजन संहिता 110:1 को मसीह के परमेश्वर के दाहिने हाथ राज करने की भविष्यद्वाणी होने के रूप में उद्धृत किया (प्रेरितों 2:34)।

आयत 2. अब्राहम द्वारा मलिकिसिदक को अत्यधिक सम्मान दिया गया, जिस ने उसके प्राण को दशंमाश (**सब वस्तुओं का दसवां अंश**) ग्रहण करने के योग्य माना। इब्रानी लोगों के पिता ने मलिकिसिदक को यह भेंट क्यों दी? उत्पत्ति 14:22–24 में अब्राहम ने कहा कि परमेश्वर के साथ की गई उसकी शपथ के कारण वह अपने लिए कुछ नहीं लेगा। वह जानता था कि मलिकिसिदक को भेंट देकर वह परमेश्वर को दे रहा है। अब्राहम के ऐसी भेंट देने की मांग करने वाले किसी नियम को हम नहीं जानते। परन्तु स्पष्टतया वह ऐसा पुरखाओं के युग के दौरान परमेश्वर के धर्म को निभाने के लिए कर रहा था।[6] यह तथ्य इस बात का संकेत देता है कि आराधना का एक सिस्टम था जिसमें परमेश्वर द्वारा याजक बनने के लिए परमेश्वर द्वारा याजक बनने के लिए पुरुषों को को ठहराया जाता था और वे आराधना में अगुआई करते थे। हो सकता है कि वह अय्यूब और यित्रो (मूसा का ससुर; निर्गमन 3:1; 18:1–27) इसी श्रेणी में आते हैं। इतिहास में इस प्रकार की आराधना कब बंद हो गई हम पक्का नहीं कह सकते, परन्तु मसीह के आने से पहले कुछ समय तक यह अवश्य थी। पहली सदी ईस्वी के समय चाहे धर्मी अन्यजातियों में से कुछ लोग थे जो मूसा की व्यवस्था को मानते थे या एक सीमित दर्जे तक अपने मनों में लिखित व्यवस्था को मानते थे, परन्तु अधिकतर लोग परमेश्वर केा छोड़ चुके थे; जिस कारण उसने उन्हें छोड़ दिया था (देखें रोमियों 1:18, 24, 28; 2:14, 15)।

आयत 3. यहूदी सिस्टम में याजकाई की नियुक्ती के लिए वंश के साथ साथ धर्मी जीवन भी आवश्यक था (इब्रानियों 5:4–6)। लेविय याजकों के वंश को उस ज़माने में आसानी से जाना जा सकता था क्योंकि सही सही हिसाब रखा जाता था। एज्रा 2:62, 63 और नहेक्याह 7:63–65 से पता चलता है कि अपने वंश का सही सबूत न दे पाने वाले मामले के सुलझ जाने तक काम नहीं कर सकते। परन्तु मलिकिसिदक लेवी के याजकीय गोत्र का नहीं था और न ही हारून के महायाजकीय परिवार का। उसके लिए वंशावली का न होना इस बात पर ज़ोर देता है कि जो बात पवित्र शास्त्र में नहीं मिलती उसे सच होने का दावा न किया जाए। चाहे परमेश्वर के रिकॉर्ड के लिए हो या उसके आज्ञापालन में हमारे कामों के लिए। इस बात की पुष्टि करने के लिए लेखक ने (**न वंशावली**) *agenealogētos* शब्द का इस्तेमाल किया जो यूनानी साहित्य में और कहीं नहीं मिलता। उसने लेवीय याजकाई और मसीह की याजकाई के लिए आवश्यक गैर वंशीय शर्त के बीच अपने अन्तर को मज़बूत करने के लिए इसे मिलाया हो सकता है, जो

कि याजकों के सम्बन्ध में नया विचार था।

इसलिए यह स्पष्ट था कि मलिकिसिदक का *याजकाई में* **न पिता** और **न माता** थी। रोमी लोग किसी के "बिना पिता" के तब कहते थे यदि उसके माता पिता का कोई रिकॉर्ड न हो। यहूदी लोग जिनके माता पिता का पता न हो या जिनकी वंशावली न मिले उन्हें बिना माता या पिता के कहते थे।[7] रब्बी यूं कहता कि यहूदी बनने वाले अन्यजाति का कोई पिता नहीं था।[8] जोसेफस ने अपने पाठकों को बताया कि वह याजकीय परिवार में जन्मा था और इसे सरकारी रिकॉर्ड से साबित कर सकता था।[9]

पुराने नियम में मलिकिसिदक पहला याजक बताया गया है। इस काल्पनिक विचार को कि वह मनुष्य रूप में मसीह था इस बात से निकाल दिया जाता है कि वह **परमेश्वर के पुत्र के स्वरूप** पर था; उसका *स्वरूप* होने के कारण वह वही व्यक्ति नहीं हो सकता था। वह केवल एक "मनुष्य" था (आयत 4)। मलिकिसिदक परमेश्वर के पुत्र के समान था परन्तु वह परमेश्वर का पुत्र नहीं था। कहने का अर्थ यह है कि याजकाई में मलिकिसिदक की वंशावली का कोई रिकॉर्ड नहीं है इस कारण वह हमारे प्रभु की याजकाई के दृष्टांत के रूप में ही था। वह लेवी के कुल का नहीं था परन्तु अब्राहम द्वारा उसे सीधे ही याजक माना गया, इस कारण मलिकिसिदक ने यीशु की याजकाई के लिए नमूना ठहरा दिया। लगभग आधी सहस्राब्दी के बाद भजन संहिता 110:4 में संकेत दिया गया कि उस नमून के अनुसार किसी और ने आना था। हमारे प्रभु के याजकीय माता पिता न होने में उसे हमारा महायाजक होने के अयोग्य नहीं ठहराया।

वह सदा के लिए याजक बना रहता है। "युगानयुग" (7:17, 21) और "सदा के लिए" (7:3) का अर्थ है, जैसे पुराने नियम में आम तौर पर होता है, उस पूरे काल के लिए जिसमें यह शब्द लागू होता है। रोमी लोग एक सामान्य तानाशाह के बजाय "डिक्टेटर पर परपेट्युस" के पद को किसी भी अन्य पद से सक्षमाननीय पद के लिए इस्तेमाल करते थे।[10] वे इस बात को समझते थे कि तानाशाह या कैसर सदा के लिए नहीं रह सकते। परन्तु कोई कानून रोमी सम्राट के कार्यकाल को सीमित नहीं करता था इस कारण उसके शासन को "युगानयुग" होने की बात कही जाती थी।

आयतें 4–7. पूर्व के राजाओं को जीतकर और लूत और उसके परिवार को वापस लाकर **अब्राहम** हेब्रोन को वापस जाते हुए यरूशलेम के निकट के क्षेत्र में से गुज़रा (उत्पत्ति 14)। जीत का रोमांच और युद्ध की **लूट** का माल वापस लाने की महिमा उस आभार और सम्मान के सामने फीकी लगती है जो उसे उन से मिली होगी जिन्हें दिया गया था (आयत 4)। बेशक उस समय वह अपने उस इलाके का सबसे सम्मानित व्यक्ति था। अब्राहम परमेश्वर के प्रति आभार जताना चाहता था और ऐसा उसने याहवेह के प्रतिनिधि, मलिकिसिदक, "शालेम का राजा" और "परमप्रधान परमेश्वर का याजक" के द्वारा प्रभु के काम के लिए बहुत योगदान देकर अपनी ओर से बेहतरीन ढंग से किया।[11] इस काम से पता चलता है कि अब्राहम याजक/राजा को परमेश्वर के सामने अपने से बड़ा मानता था (देखें आयत 7)। उसने मलिकिसिदक को अपनी भेंट देकर और याजक की आशीष ग्रहण करके ऐसा स्वीकार किया। उसे उस व्यक्ति की महानता का कैसे पता चला शायद हम इसका अनुमान ही लगा सकते हैं। उसे कोई प्रकाशन दिया गया हो सकता है या उसे आम तौर पर पता होगा कि मलिकिसिदक याजक के रूप में परमेश्वर की सेवा करता है।

अब्राहम ने **दसवां अंश** (दशमांश) देना चुना जो कि आरम्भिक समयों से परमेश्वर को दी जाने वाली सामान्य भेंट होगा।[12] मलिकिसिदक ने दसवां अंश नहीं मांगा था परन्तु उसने इसे अनुग्रहपूर्वक स्वीकार कर लिया और बदले में अब्राहम को आशीष दी। स्पष्टतया उसे ऐसा करने का अधिकार और सामर्थ परमेश्वर की ओर से मिला था। परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में मलिकिसिदक को हर सच्चे आराधक से दशमांश लेने का अधिकार था, न केवल उसके अपने लोगों से। लेवीय याजकों से केवल इस्राएलियों के भेंट लेने की अनुमति थी।[13] यह हारून की याजकाई से मलिकिसिदक की याजकाई से श्रेष्ठ होने का एक संकेत है। दशमांश **लेवी की संतान** (लेवियों) को दिया जाते थे क्योंकि यह परमेश्वर की व्यवस्था थी (आयत 5)। इसलिए इसका चयन व्यक्ति पर नहीं छोड़ा जाता था बल्कि परमेश्वर द्वारा इसकी शर्त रखी गई थी। अब्राहम द्वारा दिया जाने वाला दशमांश उस समय परमेश्वर की किसी प्रत्यक्ष या स्पष्ट आज्ञा के बिना लगता है। उसे स्पष्टतया पता था कि कितना प्रतिशत दिया जाता था। मलिकिसिदक ने दशमांश को स्वीकार कर लिया क्योंकि उसे परमेश्वर के साथ अपनी स्थिति का पता था।

आयत 7. इसमें संदेह नहीं कि छोटा बड़े से आशीष पाता है (आयत 7) शब्द संकेत देते हैं कि मलिकिसिदक अब्राहम से बड़ा था। जब किसी छोटे व्यक्ति ने जैसे योआब ने "राजा को आशीर्वाद दिया" (2 शमूएल 14:22) तो लगता है कि वह हाकिम के प्रति आदर और सम्मान को दिखा रहा था। इब्रानियों के लेखक ने यह सवाल नहीं किया कि उसके पाठकों को अब्राहम के मलिकिसिदक से छोटा होने के तथ्य की समझ थी, चाहे अब्राहम **कुलपति** (*patriarchēs*; आयत 4) था। "कुलपति" पद अब्राहम की महानता को दिखाता है; यह सुझाव देता है कि वह यहूदी लोगों के संस्थापक के रूप में बड़ा महत्वपूर्ण व्यक्ति था।[14] मलिकिसिदक उस "कुलपति" से बड़ा था इस कारण उसकी याजकाई (मसीह समेत) उस याजकाई से बड़ी होनी थी जो अब्राहम के कुछ में से होनी थी। इस प्रकार इब्रानी पाठक यीशु की ओर ताकने के बजाय लेवीय याजकाई की ओर नहीं निर्भर रह सकते थे।

अब्राहम का मलिकिसिदक से आशीष स्वीकार करना उस पुरखे और उसकी संतान के कम होने का और संकेत था। यह आशीष अब्राहम की भलाई की इच्छा करने से बढ़कर थी, क्योंकि ऐसी आशीष तो कोई भी दे सकता था। इसके बजाय इसमें आशीष देने के परमेश्वर के इरादे की घोषणा करने के अधिकार का संकेत था। पुरखाओं के युग में इसी उदाहरण को मानते हुए इसहाक और याकूब ने भविष्यद्वाणी की ईश्वरीय दीशा में अपने बच्चों को आशीष दी (11:20, 21; देखें उत्पत्ति 27; 49)। व्यवस्था के अधीन याजक परमेश्वर की आशिषों की घोषणा भी कर सकते थे। अब्राहम को दी गई आशीष उसी से मेल खाती होगी। यह यीशु के अपने चेलों को आशीष देने जैसा था, जो कि उनके लिए परमेश्वर को केवल धन्यवाद देने से बढ़कर होगा (लूका 24:50, 51)।[15] मलिकिसिदक की तरह ही जिसने बड़ा होने के कारण अब्राहम को जो छोटा था आशीष दी, यीशु की आशीष बड़े से कई छोटे प्राप्तकर्त्ताओं को मिली (आयत 7)।

आयत 8. पवित्र शास्त्र में मलिकिसिदक की मृत्यु या याजक के रूप में उसके अन्त का कोई रिकॉर्ड नहीं है। इसके बजाय लेखक ने कहा **वह जीवित है। जिसकी गवाही दी जाती है** (*marturəō*) उत्पत्ति की पुस्तक में पाए जाने वाले वचन की ओर ध्यान दिलाता है। इब्रानियों की पुस्तक में ऐसी सात अभिव्यक्ति का इस्तेमाल हुआ है, जिनमें से दो पुराने नियम की बातें हैं

(7:17; 10:15)। स्पष्टतया यहां पर यही बात है, ''एक भद्र स्मरण'' दिलाते हुए ''कि लेखक अपनी बात का आधार किसी आधिकारात्मक स्रोत बना रहा है।''[16]

मलिकिसिदक की मृत्यु की गवाही देने के रिकॉर्ड का न होना लेवीय प्रबन्ध के बिल्कुल उलट है। जहां तक मलिकिसिदक का रिकॉर्ड बताता है, वह सर्वदा जीवित है। हारून के प्रबन्ध के अधीन सेवा करने वाले मर जाते थे और उनकी मृत्यु का हिसाब होता था; परन्तु मलिकिसिदक के प्रबन्ध के अधीन रहने वालों के साथ ऐसा नहीं है (यह मानते हुए कि दूसरे भी थे)। उनकी मृत्यु की जानकारी सहित व्यवस्था के अधीन महायाजकों के सम्बन्ध में बड़े ध्यान से रिकॉर्ड रखा जाता था (1 इतिहास 6:50-53)। ऐसे रिकॉर्ड रखना आवश्यक था क्योंकि याजकाई के लिए हारून के परिवार और लेवी के गोत्र की वंशावली का होना आवश्यक था। परन्तु मलिकिसिदक की वंशावली का बिल्कुल कोई पता नहीं है।

याद रखें कि लेखक याजकीय पद के काम की बात कर रहा था न कि उसके शारीरिक जीवन की। इस संसार में, **मरनहार मनुष्य दसवां अंश लेते हैं**। पवित्र शास्त्र मलिकिसिदक की मृत्यु की कोई बात नहीं बताता इस कारण उसकी याजकाई यीशु के लिए उचित प्रतीक है, जो मरा तो सही परन्तु अपनी याजकाई का शुभारम्भ करने के लिए फिर से जी उठा। पवित्र शास्त्र इस बात का रिकॉर्ड और गवाही देती है कि वह जीवित है! उसके पास अनन्त जीवन है जिसका अर्थ स्वाभाविक रूप में यह है कि मसीह की याजकाई जारी रहती है।

यहां तक हमें मलिकिसिदक की याजकाई और लेवीय याजकाई के बीच कोई तुलना देखने को नहीं मिलती। यदि अब्राहम मलिकिसिदक से छोटा था तो लेवी की याजकाई मलकिसिदक की याजकाई से छोटी थी। ''अपने तर्क को मानने योग्य बनाने के लिए लेखक यहां पर सबसे बुनियादी इब्रानी अवधारणाओं में से एक लागू करता है जब वह कहता है कि लेवी ने स्वयं ... अब्राहम के द्वारा दशमांश दिया।''[17]

आयतें 9, 10. तो हम यह भी कह सकते हैं (आयत 9) किसी चौंकाने वाली प्रतिकात्मक बात को सीमित करने और गलतफहमी को दूर करने के लिए यूनानी लेखकों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली आम अभिव्यक्ति थी।[18] बेशक लेवी वास्तव में **अब्राहम** की **देह में** नहीं था; यह लेवी को अब्राहम की संतान के रूप में बताने की एक अभिव्यक्ति थी। और सही ढंग से इसका अनुवाद ''अभी उसका जन्म होना था'' हो सकता है।[19] अब्राहम यहूदी परिवार का प्रतिनिधिक मुखिया था, इस कारण एक अर्थ में उसके किए हुए काम उसकी संतान के काम ही माने गए। यह रोमियों 5:12-14 और 1 कुरिन्थियों 15:22 में आदम के सम्बन्ध में इस्तेमाल लगता है। एचबर्ट बारनस ने इंग्लिश कॉमन लॉ से यह उदाहरण दिया: ''यह तथ्य कि दूर के पूर्वज ने किसी दूसरी श्रेणी या उपादी वाले जन्म को श्रृद्धांजलि या आदर या निष्ठा दिखाई, परिवार में स्वीकृत रूप में छोटा होने का प्रमाण माना जाना था और इसका इस्तेमाल तर्क में बल और शुद्धता से इस्तेमाल किया जा सकता था।''[20] इसी प्रकार उसने लिखा कि यदि किसी पिता ने भूमि का टुकड़ा बेचा हो तो यह ऐसा ही होगा जैसे वारिस ने स्वयं बेचा हो।

इस चर्चा में वास्तविक अन्तर **मलिकिसिदक** की और लेवी की याजकाई के प्रबन्ध में है, जिससे हारून छोटा वंशज था। इब्रानियों की पुस्तक में महत्वपूर्ण बात मलिकिसिदक की याजकाई/राजा होना की नहीं बल्कि मसीह और परमेश्वर की योजना में उसकी भूमिका की है।

तर्कसंगत तर्क यह दिया जा सकता है कि अब्राहम स्वयं इस बात में याजक था कि वह बलिदान भेंट करता रहता था और परमेश्वर से उसकी बातचीत होती रहती थी। तौभी उसने मलिकिसिदक को अपने से बड़ा माना। इसके अलावा जैसा कि बाद में इस्राएल में याजकों की भूमिका से संकेत मिला, अब्राहम ने अन्य लोगों और परमेश्वर के बीच मध्यस्थ का काम किया होगा। यह उसके अपने भतीजे लूत के प्रति परमेश्वर का समर्थन मांगने से सुझाया जाता है (उत्पत्ति 18:22-33)।

नये नियम के अधीन मसीही लोग मसीह के राज्य में याजक हैं और उन्हें "आत्मिक बलिदान" चढ़ाना आवश्यक है (1 पतरस 2:5; देखें प्रकाशितवाक्य 1:6; 5:10)। "पवित्र लोग" के रूप में सब मसीही समान हैं, जिनमें कोई भी दूसरे से बड़ा नहीं है। केवल बड़ी सेवा ही किसी को परमेश्वर की दृष्टि में बड़ा बना सकती है (मत्ती 20:25-28)। चाहे हम याजक हैं पर हम सब को अपनी प्रार्थनाओं को और प्रभावशाली बनाने के लिए हमारे बड़े मध्यस्थ मसीह की सहायता की आवश्यकता है (इब्रानियों 4:14-16; 7:25)।

मलिकिसिदक की रीति पर मसीह की महायाजकाई (7:11-22)

[11]यदि लेवीय याजक पद के द्वारा सिद्धि प्राप्त हो सकती है (जिसके सहारे से लोगों को व्यवस्था मिली थी) तो फिर क्या आवश्यकता थी, कि दूसरा याजक मलिकिसिदक की रीति पर खड़ा हो, और हारून की रीति का न कहलाए? [12]क्योंकि जब याजक का पद बदला जाता है, तो व्यवस्था का भी बदलना आवश्य है। [13]क्योंकि जिस के विषय में ये बातें कही जाती हैं कि वह दूसरे गोत्र का है, जिसमें से किसी ने वेदी की सेवा नहीं की। [14]तो प्रकट है, कि हमारा प्रभु यहूदा के गोत्र में से उदय हुआ है और इस गोत्र के विषय में मूसा ने याजक पद की कुछ चर्चा नहीं की। [15]हमारा दावा और भी स्पष्टता से प्रकट हो जाता है, जब मलिकिसिदक के समान एक और याजक उत्पन्न होने जाता है। [16]जो शरीरिक आज्ञा की व्यवस्था के अनुसार नहीं, पर अविनाशी जीवन की सामर्थ के अनुसार नियुक्त हुआ हो। [17]क्योंकि उसके विषय में यह गवाही दी गई है,

"तू मलिकिसिदक की रीति पर युगानुयुग याजक है।"

[18]इस प्रकार पहली आज्ञा निर्बल; और निष्फल होने के कारण लोप हो गई। [19](इसलिए कि व्यवस्था ने किसी बात की सिद्धि नहीं की) और उसके स्थान पर एक ऐसी उत्तम आशा रखी गई है जिसके द्वारा हम परमेश्वर के समीप जा सकते हैं। [20]मसीह की नियुक्ति बिना शपथ नहीं हुई। [21](क्योंकि वे तो बिना शपथ याजक ठहराए गए पर यह शपथ के साथ उसकी ओर से नियुक्त किया गया जिसने उसके विषय में कहा,

"कि प्रभु ने शपथ खाई,
और वह उससे फिर न पछताएगा,

कि तू युगानुयुग याजक है'')।

[22]इसी प्रकार यीशु एक उत्तम वाचा का जामिन ठहरा।

इब्रानियों 7:11-22 इस आपत्ति में लिखा गया हो सकता है कि यीशु याजक नहीं हो सकता था क्योंकि उसकी वंशावली गलत थी। ईश्वरीय प्रेरणा से निर्देशित इब्रानियों के लेखक ने एक वचन भजन संहिता 110:4 का इस्तेमाल किया जिसमें भविष्यद्वाणी की गई थी कि नई वाचा में नई याजकाई है। पहली सदी के पाठकों को लगता होगा कि नई याजकाई पुरानी याजकाई के साथ साथ रह सकती है; इब्रानियों की पुस्तक लिखे जाने तक उन्हें यह नहीं कि याजकाई का स्थान मसीह की याजकाई ने ले लेना था।

आयतें 11, 12. याजक का पद बदला (आयत 12) जाने की अवधारणा से मसीहियत के प्रति की यहूदियों में विरोध उत्पन्न हो गया। लम्बे समय से उनकी निष्ठा मानी जाने वाली **व्यवस्था** के बदलने जाने को स्वीकार करना सहन करने से बाहर था।

नई याजकाई ने पुरानी याजकाई का स्थान लेकर वह यानी **सिद्धि** दिलानी थी जो पुरानी याजकाई नहीं दिला सकती (आयत 11)। ऐसी सिद्धता में मनुष्य की मसीह के द्वारा परमेश्वर तक पहुंच मिलना शामिल था। यहां हम इब्रानियों की पुस्तक की मुख्य बात को देखते हैं कि परमेश्वर तक जान का कोई और मार्ग नहीं है (यूहन्ना 14:6)।

''सिद्धि'' (*teleiōsis*) का चाही और पाई गई मंजिल यानी सम्पूर्णता या सिद्धता का संकेत है जो पुरानी वाचा में नहीं थी। यहूदी लोग मानते थे कि सिद्धता **लेवीय याजक पद** के द्वारा पाई जा सकती थी और इस कारण दोनों को अलग नहीं किया जा सकता था। वास्तव में व्यवस्था का आधार लेवीय पद की याजकाई ही था। हमारे वचन पाठ में पता चलता है कि बलिदानों का पुराने नियम सिस्टम का उन का विचार भ्रमित था कि व्यवस्था के अधीन किए जाने वाले ''बैलों और बकरों का लहू'' की भेंटों के बलिदानों के द्वारा पाप क्षमा नहीं हो सकते थे (10:4)।

''सिद्धि'' का अर्थ पाप रहित सिद्धता या पाप करने की हर इच्छा पर पूरी तरह से काबू पा लेना नहीं है बल्कि इसका अर्थ स्पष्ट रूप में पापों की पूर्ण क्षमादान और क्षमा है। यदि उद्धार लेवीय याजक पदती के द्वारा मिल सकता तो परमेश्वर ने दाऊद के समय में क्यों कहा कि एक और याजकाई पद आरम्भ होगा (देखें भजन संहिता 110:4)? इससे यहूदी याजकाई में कमी का पता चलता था। नई याजकाई यहूदीवाद के मुख्य विश्वास पर प्रहार था! लोग यह मान बैठे थे कि ''याजकाई से सम्बन्धित नियम सदा के लिए मान्य हैं।''[21]

यह दिखाते हुए कि यह जीवन नहीं दिला सकती थी पौलुस ने व्यवस्था के सम्बन्ध में ऐसे ही तर्क दिया (गलातियों 3:21; देखें 2:21)। वास्तव में इस्राएल के इतिहास में सबसे धर्मी लोग भी अपने आपको सिद्ध नहीं बना सकते थे (इब्रानियों 11:40)। मसीह इस समस्या का एकमात्र हल है (रोमियों 7:7-25)। व्यवस्था में इस स्थिति का कोई समाधान नहीं था क्योंकि इसका बोझ पाप से छुटकारा दिलाने के बजाय पाप के प्रति जागरूकता बड़ा रहा था (गलातियों 3:19)।

लेवीय याजकाई को मूसा की व्यवस्था से अलग नहीं किया जा सकता था इस कारण

दूसरे को बुरी तरह से प्रभावित किए बिना एक को बदला नहीं जा सकता था। व्यवस्था के लिए याजकाई का होना आवश्यक था; ''व्यवस्था बिना [याजकाई के] काम नहीं कर सकती थी।''[22] वास्तव में व्यवस्था लेवीय याजकाई के आधार पर दी गई थी (आयत 11), क्योंकि याजकाई सीनै पहाड़ पर व्यवस्था दिए जाने से पहले स्थापित हो गई थी।

मानवीय दृष्टिकोण से लगता है कि परमेश्वर एक अलग याजकाई वाला एक और सिस्टम देने के लिए अपनी व्यवस्था को बदल सकता था। परन्तु परमेश्वर का ढंग आयत 14 में देखने को मिलता है। नई याजकाई के लिए तर्कसंगत रूप में एक नई व्यवस्था की आवश्यकता थी। याजकाई व्यवस्था का आधार और ढांचा थी, इस कारण या तो दोनों रहती या दोनों गिर जाती (आयत 12)। यहूदीवाद के बीत जाने और आंशिक धर्मी ठहराए जाने के इसके सिस्टम से सम्बन्धित नये नियम में दी गई यह सबसे स्पष्ट व्याख्या है। इसका अनुमान कलीसिया के आरम्भ से ही स्पष्ट था, जैसा कि महासभा के आरोप में इसे समझा गया: ''क्योंकि हम ने उसे यह कहते सुना है, कि यही यीशु नासरी इस जगह को ढहा देगा, और उन रीतों को बदल डालेगा जो मूसा ने हमें सौंपी हैं'' (प्रेरितों 6:14)। व्यवस्था के रिवाज़ बदने वाले थे। बहुत से याजक चाहे विश्वासी बन गए थे (प्रेरितों 6:7) पर उनके लिए सुसमाचार की इस बुनियादी सच्चाई को स्वीकार करना कठिन रहा होगा।

इस बदलाव में क्या क्या होना था? कुछ लोग यह ज़ोर देते हैं कि इसमें केवल रसमी व्यवस्था का माना जाना ही नहीं होना था, जैसे कि याजकाई की रस्मी और बलिदान, परन्तु दस आज्ञाओं का नहीं। वे यह दावा करते हुए कि नैतिक व्यवस्था ननहीं हटाई गई थी चाहे रस्मी व्यवस्था हटाई गई थी चाहे ''नैतिक व्यवस्था'' और ''रस्मी व्यवस्था'' में अन्तर करने की कोशिश करते हैं। विचार यह है कि शेष भाग को बने रहने देकर व्यवस्था को आंषिक रूप में हटाना का आधार बाइबल का नहीं है। न ही पवित्र शास्त्र और न ही आरम्भिक कलीसिया नैतिक, रस्मी और न्यायिक भागों में बंटी हुई है। एस. एस. ब्रूस यह कहने में सही था, ''नैतिक और रस्मी व्यवस्था में अन्तर मसीही धर्मशास्त्र के द्वारा किया जाता है न कि पूरी व्यवस्था को परमेश्वर की इच्छा मानने वालों द्वारा, न ही नये नियम के लेखकों द्वारा।''[23] कई बार पवित्र शास्त्र भी भजन की पुस्तक को ''व्यवस्था'' का भाग बताता है (यूहन्ना 10:34; देखें भजन संहिता 82:6)। व्यवस्था के कुछ भागों को रस्मी कहा जा सकता था परन्तु कोई यह दावा न करे कि केवल उसी भाग को निकाला गया था, दूसरे को नहीं। जेम्स बर्टन कॉफ़मैन ने लिखा है, ''इस पूरी पत्री में 'व्यवस्था' की अभिव्यक्ति के अर्थ का थोड़ा भी सुझाव नहीं है जो इसे सामान्य अर्थ में मूसा की व्यवस्था से अलग करे।''[24] **व्यवस्था का बदलना** बेशक मूसा के पूरे सिस्टम को कहा गया है।

7:12 से आरम्भ करके इब्रानियों की पुस्तक तीन बार कहती है कि मसीह में व्यवस्था को हटाया गया, या अलग किया गया है (देखें 7:18; 10:9)। रोमियों 7 में पौलुस ने तर्क दिया कि यहूदी मसीही लोग लालच के विरुद्ध वाली व्यवस्था सहित (आयत 7), व्यवस्था ''से छूट गए'' (आयत 6), ''के लिए मरे हुए बन गए'' थे (आयत 4)। वह विशेष नियम रस्मी होने से बढ़कर था जो कि निश्चित रूप में दस आज्ञाओं का भाग है। पौलुस ने व्यवस्था की उन बातों में जिन्हें मसीह ने क्रूस पर कीलों से जड़ दिया, सब्त को भी शामिल किया (कुलुस्सियों

2:14–17)। ''मृत्यु की वाचा'' में पत्थर पर लिखी आज्ञाएं भी थीं (2 कुरिन्थियों 3:1–11)। यीशु के व्यवस्था की हर बात को सही ढ़ग से मानकर इसे पूरा कर देने पर, पूरी व्यवस्था को हटा दिया गया (देखें मत्ती 5:17, 18)।

आयत 13. फरीसियों और यहूदी मत में लाने वालों ने अवश्य तर्क दिया होगा कि यीशु पाप का बलिदान या वह याजक नहीं बन सकता था जो बलिदान चढ़ाए क्योंकि वह गलत **गोत्र** में से था। केवल लेवी के गोत्र के पुरुष ही मूसा के नियम के अधीन याजकों का काम कर सकते थे, और हारून के परिवार को छोड़ कोई और महायाजक का काम नहीं कर सकता था। सब को पता था कि यीशु यहूदा के गोत्र का था जो कि याजकाई के पद वाला गोत्र न होकर शाही गोत्र था। मन्दिर के विनाश (70ईस्वी में) से पहले ऐसे दस्तावेज़ सबसे के लिए उपलब्ध थे और यहूदी विरोध करने वाले उनका खण्डन नहीं कर सकते थे। तो हम मान सकते हैं कि पहली सदी में यीशु के दाऊद का वंश होने का खण्डन करने का कोई प्रयास नहीं हुआ। मत्ती 2:5, 6 यह दिखाते हुए कि यीशु दाऊद के नगर बैतलहम में जन्मा था इस वंशावली का संकेत देता है। लूका 3:23–31 और मत्ती 1:6–16 वाली वंशावलियों से पता चलता है कि वह दाऊद का पुत्र था और प्रकाशितवाक्य 5:5 बताता है कि वह ''दाऊद का मूल'' था। मत्ती के कहने का अर्थ हो सकता है कि उसे यूसुफ़ द्वारा गोद लिया गया था, जबकि लूका मरियम के द्वारा उसकी वंशावली बताता है। यूसुफ़ को केई बार यीशु का ''सौतेला पिता'' कहा जाता है परन्तु यह सम्भावना अधिक है कि यीशु को सब लोग जो मरियम की कहानी को जानते थे यूसुफ़ का गोद लिया पुत्र मानते थे। बेशक यूसुफ यीशु का ''लेपालक'' पिता होने में विशेष गर्व मानता था। परन्तु शाही कुल का संकेत ''दाऊद की संतान'' पद में था।[25]

आयत 14. तो प्रकट है का अर्थ है ''यह बिल्कुल साफ़ है,'' या ''हर कोई जानता है'' (JB) फिलिप्पस ने इसका अनुवाद किया है, ''यह इतिहास की बात है।'' ASV की अभिव्यक्ति का इस्तेमाल करें तो यह ''प्रकट'' तथ्य यह है कि मसीह ''यहूदा में से निकला।'' यहां ''यिशै के ठूंठ में से डाली ...'' की भविष्याणी का संकेत (यशायाह 11:1) और दाऊद का ''धर्मी के अंकुर'' का विचार हो सकता है (यिर्मयाह 23:5, 6) जिसे परमेश्वर ने ''खड़ा'' करना था। ''इस दावे में कि हमारा प्रभु यहूदा में से *उदय हुआ* है मसीहा के विशेष दस्तूर को दिखाता है।''[26] यहां पूरा तर्क ही भजन संहिता 110:4 द्वारा संकेत दिए गए अलग याजकीय पद पर आधारित है इस कारण जिसने इस भविष्यद्वाणी को पूरा किया वही भजन संहिता 110:1 वाला है जिसे परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठने का निमन्त्रण दिया गया था। ''हमारे लेखक के तर्क की चमक'' दिखाती है कि ''यीशु के याजकीय पद के परिचय पत्र स्थापित हो गए हैं।''[27]

यह कहने के कि यीशु पुरानी वाचा में याजक नहीं हो सकता था दिया गया कारण यह था कि **मूसा ने यहूदा** के गोत्र से **याजक पद की कुछ चर्चा नहीं की**। इस प्रकार लेखक ने यह कहकर कि ''परमेश्वर ने नहीं कहा, 'यहूदा में से याजकों को मत लो,' परन्तु निश्चय ही उसने गोत्र के सम्बन्ध की उपेक्षा करके अपने पुत्र के साथ विशेष व्यवहार करेगा, वह उसे याजक बना देगा चाहे वह अधिकृत याजकाई के गोत्र में से नहीं है।'' यीशु लेवीय नहीं था, परन्तु व्यवस्था को पूरा करने के कारण वह पुराने रिवाज़ से बंधा नहीं है।

आयत 15. और भी स्पष्टता से प्रगट क्या है। इसके पांच और विचार देने के बाद

रॉबर्ट मिलिगन ने अपना विचार दिया। उसने कहा कि 7:11–22 का पूरा की पूरी प्रतिज्ञा का हवाला है, जिसे इस प्रकार संक्षिप्त किया जा सकता है: ''ऐसा बदलाव किया गया था जिससे याजकाई का लेवीय प्रबन्ध और व्यवस्था भी जो इसके सम्बन्ध में दी गई थी दोनों मिटा दिए जाएं।''[28] भविष्यद्वाणी में एक और याजक की पूर्व सूचना दी गई थी (भजन संहिता 110:4), जिससे यहूदी समझ रखने वालों को यह स्पष्ट हो गया कि व्यवस्था में परिवर्तन होने वाला था। परन्तु नया **याजक मलिकिसिदक के समान** था। मलिकिसिदक इस बात में परमेश्वर के पुत्र के समान था, जैसा कि रिकॉर्ड था, वह मसीह की तरह सदा के लिए याजक था (7:2, 3)। मलिकिदिक यीशु का उदाहरण वैसे ही था जैसे एलिय्याह यूहन्ना का। हर आवश्यक ढंग से यीशु ने मलिसिदिक की याजाकई में पाए जाने वाले दृष्टांत को पूरा किया: ''मलिकिसिदक द्वारा जिस *वास्तविकता* की परछाई दी गई वह मसीह है। ...''[29]

आयत 16. लेवीय याजकाई किसी श्रेष्ठ चरित्र पर नहीं बल्कि केवल **शारीरिक आज्ञा** (मूल में, ***sarkinos,*** जिसका अर्थ ''शारीरिक,'' या ''शरीर का'' है) पर आधारित है। आज्ञा का सम्बन्ध कुल से था; यह ''पृथ्वी के नियमों का सिस्टम'' (NEB) था। पुराना सिस्टम धर्म के बाहरी रूपों से सम्बन्धित था जैसे याजकों का शारीरिक वंश, भौतिक तम्बू और पशुओं के बलिदान। ऐसा सिस्टम नये नियम की मसीहियत की प्रकृति से बाहर है, जो अधिक से अधिक भीतरी अर्थात आत्मिक मनुष्य पर फोकस करता है।

यीशु की सामर्थ और अधिकार का हक्क ''अन्तहीन जीवन'' (KJV) या **अविनाशी जीवन की सामर्थ** (NASB; RSV; ISV) पर आधारित था। वह हमारे साथ सहानुभूति कर सकता है क्योंकि वह कुछ समय के लिए हमारी तरह शरीर में रहा, जिसे लोग मार सकते थे (2:14, 15; 4:15; 5:7, 8)। तो भी वे उसकी आत्मा को नष्ट नहीं कर सके; उसकी देह के कब्र में होने के बावजूद वह अधोलोक के संसार में जीवित था; मृत्यु उसे वश में न रख सकी (प्रेरितों 2:31)। वह परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा उसके सामने हमारा प्रतिनिधित्व करते हुए सर्वदा जीवित है (भजन संहिता 110:1)। वह केवल कानूनी अधिकार से नहीं बल्कि सामर्थ और अधिकार से याजक है। परमेश्वरत्व की सारी परिपूर्णता उसी में सदेहवास करती है (कुलुस्सियों 2:9)। उसमें ''सदा के लिए बचाने'' या ''अन्त तक'' सामर्थ है (KJV; ASV; NKJV) उन्हें जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं (7:25)। लेवीय याजकाई को स्थापित करने वाली आज्ञा बाहरी और नाशवान थी। यह किसी भी समय जब परमेश्वर तैयार होता बदली जा सकती थी। इसके विपरीत, ''मसीह का जीवन अपने आप में है और अविनाशी है।''[30]

आयत 17. जेम्स मैकनाइट ने लिखा है कि तम्बू में काम इतना मुश्किल था कि आदमी पचास की उम्र के पार नहीं जा सकता था (गिनती 4:2, 3), परन्तु यीशु के साथ ऐसा नहीं है।[31] मसीह की याजकाई की श्रेष्ठता साबित हो चुकी है। इसकी **गवाही** उसके द्वारा **दी गई है** का अर्थ है कि प्रमाण पवित्र शास्त्र के अधिकार से है (''गवाही दी जाती है''; 7:8; ''गवाही देता है''; 10:15)। उसकी याजकाई ने लोगों को परमेश्वर की उपस्थिति में लाने के वास्तविक उद्देश्य को पूरा किया। यह सम्पूर्ण, सनातन और अपरिवर्तीय है।

आयत 18. कुछ लोग **पहली आज्ञा** का अर्थ केवल लेवी की याजकाई के सम्बन्ध में दिए नियमों तक सीमित करते हैं। परन्तु याजकाई के **लोप** होने की बात मूसा की पूरी व्यवस्था के

लिए भी लागू होती है। अपने सारे दिखावटीपन और प्रभावशाली रीवाज़ के बावजूद पुरानी वाचा का सिस्टम विवेक को सच्ची शान्ति नहीं दिला सका।[32] इसकी सबसे बड़ी नाकामी आराधक को परमेश्वर तक न ला पाने में थी।[33] व्यवस्था का विलक्षण उद्देश्य पाप के विरुद्ध सिखाना और लोगों को मसीह की ओर लाना था (गलातियों 3:24)। व्यवस्था "अपराधों के कारण" जोड़ी गई (गलातियों 3:19) और इसने अपनी पवित्रता के उलट पाप के स्वभाव को दिखाने के उद्देश्य को प्राप्त किया (रोमियों 7:12)। व्यवस्था अपने आप में सिद्ध थी (भजन संहिता 19:7) और इसने सफलतापूर्वक यहूदियों को पाप का ज्ञान दिया (रोमियों 7:7)। परन्तु "शरीर के कारण दुर्बल" थी (रोमियों 8:3); यह मनुष्य को पाप पर काबू पाने या उस पाप से उसे छुड़ाने में नाकाम रही।

आयत 19. पाप से विजय और छुटकारा केवल मसीह में मिलता है, व्यवस्था के द्वारा नहीं। अन्य शब्दों में **व्यवस्था ने किसी बात की सिद्ध नहीं की।** अपने आप में यह सिद्ध थी, परन्तु यह मनुष्य की कमियों की क्षतिपूर्ति नही कर सकी क्योंकि इसने पाप के लिए पूरा पराश्चित नहीं दिया। पुरानी वाचा की आशा को नई वाचा की आशा से नहीं मिलाया जा सकता। पुरानी वाचा के अधीन लोग केवल छुटकारा दिलाने वाले के आने की राह देख सकते थे। नई वाचा के अधीन हम जो कुछ हमारे लिए किया गया है उसकी ओर पीछे को देखकर आनन्द कर सकते हैं। यदि व्यवस्था से जीवन मिल सकता या पापियों को सिद्धि मिल जाती तो मसीह बेकार में मरा (गलातियों 2:21; 3:21)। व्यवस्था में आज्ञाएं होती हैं जो पाप से ऊपर रहने को सही ढंग से प्रेरित या प्रोत्साहित नहीं कर सकती।

व्यवस्था के अधीन जब कोई आराधक पश्चात्तापी और भरोसा रखने वाले मन के साथ अपनी भेंट लेकर आता तो परमेश्वर अनुग्रहपूर्वक "इसे यीशु की मृत्यु की ओर संकेत और विश्वासी के विश्वास के कार्य के रूप में देखता, जैसे अब्राहम के विश्वास को, 'धार्मिकता गिना गया।' "[34] पुराना नियम इस बात को स्पष्ट कर दिया कि केवल बलिदान काफ़ी नहीं था (भजन संहिता 51:16, 17; देखें आमोस 5:21)।

केवल वही व्यक्ति वास्तव में धन्य हो सकता है जिसका पाप ढांपा गया हो (भजन संहिता 32:1, 2)। पुरानी वाचा के अधीन "सिद्धि" पाने वाले उस लक्ष्य को केवल आशा में पाते थे क्योंकि मसीह ने उन्हें छुड़ाने के लिए मरना था (इब्रानियों 9:15)। पवित्र शास्त्र में जब हम पुराने नियम के उद्धार पाने वाले लोगों के बारे में पढ़ते हैं तो हमें यह समझ होनी आवश्यक है कि उनका उद्धार विश्वास के द्वारा अनुग्रह से हुआ था न कि धार्मिकता के व्यक्तिगत सिद्धि या गुण वाले कामों के द्वारा। अब्राहम का विश्वास "उसके लेखे में धर्म गिना" गया (उत्पत्ति 15:6) और व्यवस्था के अधीन "उद्धार पाने" वाले हर व्यक्ति के लिए ऐसा ही था।

गलातियों 3:24 में व्यवस्था को हमारी "शिक्षक" (*paidagōgos*) मूलतया यह शब्द सेवक या दास के लिए है जो बालक को उसके शिक्षक तक ले जाता था; हमारे *paidagōgos* के रूप में व्यवस्था हमें मसीह के पास लेकर आई।

नई वाचा मन के पाप को शुद्ध कर सकती है, इस कारण हम अब **परमेश्वर के समीप जा सकते हैं।** पुराने नियम के याजक तम्बू में प्रवेश करके परमेश्वर के निकट जाते थे। ऐसा हम प्रार्थना करने या आरधना करने के समय करते हैं। इब्रानियों 10:19–22 दिखाता है कि यीशु के लहू के द्वारा इसे कैसे प्राप्त किया जाता है। उसके लहू के बलिदान ने वास्तव में पुराने नियम के

बलिदानों को मान्य कर दिया। हमारे नये महायाजक के रूप में मसीह ने **उत्तम आशा** दी जिससे हम परमेश्वर के निकट आ सकते हैं। वास्तव में वही हमारी आशा है (1 तीमुथियुस 1:1)।

इब्रानियों की पुस्तक में फोकस अपने याजकीय बलिदान के द्वारा मसीह द्वारा हमारे लिए जो प्राप्त किया गया है उस पर है। पत्र की मुख्य विशेषता आशा है (देखें 3:6; 6:11, 18, 19; 7:19; 10:23)। परमेश्वर के निकट आने पर यीशु में मिलने वाली शान्ति उन्हें नहीं मिलती है जो विश्वास के द्वारा धर्मी नहीं ठहराए गए हैं (रोमियों 5:1, 2)। विश्वास बपतिस्मे में मसीह की आज्ञा मानने पर हमें हमारे पापों से शुद्ध करता है (प्रेरितों 22:16)। केवल इस प्रकार से शुद्ध हुए लोग ही बुरे विवेक से छूटकर "अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बांधकर" आ सकते है (4:16)।

आयत 20. मसीह की याजकाई लेवीय याजकाई से श्रेष्ठ थी। इस भाग में प्रतिउत्तर के रूप में पुस्तक की मुख्य सामग्री में से अधिकतर के साथ इस भाग में इस प्रश्न का उत्तर है। क्या आज इसका हमारे साथ कुछ लेना देना है। हां, जो लोग मसीह से बाहर है वह सदा के लिए खोए हुए हैं। जो लोग अभी पापों में हैं वे वहां नहीं जा सकते जहां मसीह है (यूहन्ना 8:21, 24)। महायाजक के रूप में केवल मसीह का काम ही उस समस्या का समाधान कर सकता है।

परमेश्वर ने "उत्तम वाचा" की गारंटी दी और जिसे उसने **शपथ** के साथ दिया। परमेश्वर ने बहुत कम शपथ को केवल "शपथ खाई गई बात के पक्का और अटल होने" को दिखाने के लिए इस्तेमाल किया।[35] परमेश्वर ने पुराने नियम में महत्वपूर्ण शपथें खाई थीं, जैसे (1) सब जातियों को अब्राहम के द्वारा आशिषें मिलने के सम्बन्ध में, उससे बांधी गई शपथ (उत्पत्ति 22:16–18); (2) विद्रोही इस्राएलियों से कि वे परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश नहीं करेंगे (व्यवस्थाविवरण 1:34, 35); (3) मूसा से कि वह कनान में नहीं जा पाएगा (व्यवस्थाविवरण 4:21); और (4) दाऊद से कि उसका वंश और उसकी राजगद्दी सदा तक रहनी थी (भजन संहिता 89:3, 4)।

परमेश्वर द्वारा शपथ का इस्तेमाल करने पर इसे ज़ोर देकर सुनिश्चित कर दिया कि वह अपने वायदे को बिल्कुल पुरा करेगा। पुरानी वाचा की याजकाई बांधे जाने के समय शपथ के साथ नहीं बांधी गई। परमेश्वर ने लेवीय याजकाई के प्रमाणिकता की शपथ नहीं खाई। लेवीय याजकाई परमेश्वर की दुर्गामी याजनाओं के लिए आवश्यक नहीं थी इसलिए इसे बदला जा सकता था। याजकाई को बदला जा सकता था क्योंकि पुरानी वाचा के साथ व्यवस्था के न टूटने वाले सम्बन्ध के कारण व्यवस्था को भी बदला जा सकता था।

आयत 21. यह आयत भजन संहिता 110:4, के पहले भाग से ली गई है जिसे आयत 17 में छोड़ दिया गया था। **प्रभु ने शपथ खाई, और वह उससे न पछताएगा कि तू युगानयुग याजक है।** परमेश्वर ने मसीह की याजकाई के मलिकिसिदक की याजाकई के जैसा होने की शपथ खाई। व्यवस्था और याजकाई के बदलने के शपथ खाकर परमेश्वर "न पछताएगा" यह नईं याजकाई उद्धार दिलाती और चाही जाने वाली किसी भी बड़े मूल्य को न छोड़कर परमेश्वर के प्रति आवश्यक मध्यस्थता देती है।

जब परमेश्वर ने कोई बात कही हो तो वह मानो हो गई। लूका 7:6–10 से पता चलता है कि यीशु ने मुंह से बोला और दूर से ही रोमी सुबेदार का सेवक चंगा हो गया। सूबेदार को यीशु

के इस तथ्य की समझ आ गई, इस कारण हमारे प्रभु ने उसके विश्वास को इस्राएल में किसी के भी विश्वास से मज़बूत माना। इस व्यक्ति ने यीशु के वचन को वैसे ही माना जैसे परमेश्वर का वचन हो। हमें भी वैसा ही करना आवश्यक है।

किसी बात के लिए जिसकी उसने शपथ खाई हो परमेश्वर पछताकर अपने मन को बदलेगा नहीं। जबकि कई बार उसने ऐसे मामलों पर जहां शर्त दी गई अपने मन को बदला है। मसीह की याजकाई से ऊपर और कुछ नहीं है; इसका स्थान कोई नहीं ले सकता। तीन बार इब्रानियों 7 कहता है कि उसकी याजकाई "सदा के लिए" है (आयतें 3, 17, 21)। यह परमेश्वर के अनुग्रह का अन्तिम काल है। अन्तकाल को छोड़ जिसे कोई युग नहीं कहा जा सकता, कोई और युग नहीं आएगा। मसीही युग के बाद सहस्त्राब्दी यानी हज़ार वर्ष के लिए कोई स्थान नहीं है। हम परमेश्वर की शपथ के कारण इस पर एक सौ एक प्रतिशत यकीन कर सकते हैं।

आयत 22. इब्रानियों की पुस्तक के विषय का एक भाग इस आयत में दिखाई देता है: **यीशु एक उत्तम वाचा का जामिन** है। "जामिन" या "ज़मानत" (*enguos*) शब्द नये नियम में और कहीं नहीं मिलता है। ज़मानत देने या ज़मानत पर छोड़ने या जो ज़मानत की रकम देता है उसके अर्थ में इस शब्द का इस्तेमाल प्राचीन कानूनी दस्तावेज़ों में होता था। इसे विवाह में बेटी के दहेज के लिए दी जाने वाले वायदे के लिए भी किया जाता था।[36] पारम्परिक यूनानी में *enguos* व्यक्ति होता था जो गारंटी देता था कि कानूनी वचनबद्धता पूरी की जाएगी।

यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा उसने हमारी पूर्ण क्षमा और अनन्त उद्धार की गारंटी दी है। हमारा उद्धार मसीह में और उसके द्वारा सुनिश्चित किया जाता है यानी वह हमारी ज़मानत है। हम जान सकते हैं कि हमें छुड़ाया गया है क्योंकि मसीह ने हमारे छुटकारे की कीमत चुका दी है। इस बात में हमारा भरोसा विश्वास के द्वारा है। परन्तु आरम्भिक गारंटी परमेश्वर की शपथ के द्वारा दी गई है (आयत 21)। यह बात की मसीही लोगों को मसीह में गारंटी मिली है शायद लेकख की चिंता को दिखाती है कि इब्रानी समाज के लोग किसी कम यानी व्यवस्था की ओर वापस जा सकते थे जो कहीं कम आश्वासन देती थी और जो उद्धार पाने के लिए किसी काम की नहीं थी।

मसीह "एक उत्तम वाचा का जामिन" बना। पत्री में यहां पर "वाचा" (*diathēkē*) शब्द पहली बार आया है। परन्तु यह इसके बाद की चर्चा में मुख्य योगदान देता हैं। (9:16, 17 के सम्बन्ध में "वाचा" शब्द के अध्ययन को देखें।) इब्रानियों की पुस्तक को "वाचा की पत्री" नाम दिया गया है। वचन "अगले दो अध्ययायों में आने वाली बातों का संकेत छोड़ देता है, इसके आगे और कुछ नहीं।"[37] यह सचमुच में "उत्तम" है जो इब्रानियों की पुस्तक का मुख्य विचार है, जिसमें नये नियम में सोलह में से तेरह बार इसी पुस्तक में इस्तेमाल हुआ है। "उत्तम वाचा" 8:8 वाली "नई वाचा" ही है।

मसीह का याजकाई का सिद्ध और स्थिर काम (7:23-28)

[23]वे तो बहुत बड़ी संख्या में याजक बनते आए, उसका कारण यह था कि मृत्यु उन्हें

रहने नहीं देती थी। [24]पर यह युगानुयुग रहता है; इस कारण उसका याजक पद अटल है। [25]इसी लिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा-पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिए विनती करने को सर्वदा जीवित है।

[26]अतः ऐसा ही महायाजक हमारे योग्य था, जो पवित्र, और निष्कपट और निर्मल, और पापियों से अलग, और स्वर्ग से भी ऊंचा किया हुआ हो। [27]उन महायाजकों की नाईं उसे आवश्यक नहीं कि प्रति दिन पहिले अपने पापों और फिर लोगों के पापों के लिए बलिदान चढ़ाए; क्योंकि उसने अपने आप को बलिदान चढ़ाकर उसे एक ही बार में पूरा कर दिया। [28]क्योंकि व्यवस्था तो निर्बल मनुष्यों को महायाजक नियुक्त करती है; परन्तु उस शपथ का वचन जो व्यवस्था के बाद खाई गई, उस प्रभु को नियुक्त करता है जो युगानुयुग के लिए सिद्ध किया गया है।

7:22-28 के याजकाई के बड़े वचन में मसीह के तीन चित्र दिए गए हैं। हम पहले ही देख चुके हैं कि वह ''एक उत्तम वाचा का [हमारा] जामिन'' है (आयत 22)। हम यह भी देखते हैं कि वह हमारा सनातन याजक और हमारा प्रभावशाली बलिदान है (आयतें 26, 27)। रेमंड ब्राउन ने लिखा है कि ''मसीह के याजकाई के काम आर बलिदान में उसकी स्थाई प्राप्ति, असीमित सामर्थ, वर्तमान सेवकाई, पाप रहित चरित्र और सिद्ध बलिदान'' है।[38]

आयतें 23, 24. याजक 70ईस्वी में यरूशलेम के पतन से पहले जब मन्दिर गिराया गया था तो उनके बलिदान बन्द हो गए थे, इब्रानियों की पुस्तक लिखे जाने के समय मन्दिर में सेवा कर रहे थे। लेखक मुख्य रूप में बीत समय के आदर्श समय की बात कर रहा हो सकता है जब हारून के परिवार के सही महायाजक सेवा कर रहे थे। यही कारण हो सकता है कि इब्रानियों की पुस्तक में विशेष रूप में मन्दिर का उल्लेख नहीं है।

मृत्यु या पद के अपने सीमित समय के कारण व्यवस्था के अधीन असंख्य या **बड़ी संख्या में** महायाजकों ने सेवा की, जबकि कलीसिया में सदा के लिए हमारा एक ही महायाजक है। जोसेफ़ के अनुसार यरूशलेम के गिरने से पहले तिरासी महायाजक थे।[39] बहुत से और याजक भी थे जिनकी एक समय में गिनती पन्द्रह सौ होती थी।[40] हर याजक का रिकॉर्ड ''और वह मर गया'' जैसे वाक्यांश के साथ खत्म होता है। मूसा हारून और उसके पुत्र ऐलियाजार को होर पहाड़ की चोटी पर ले गया, हारून के याजकाई के वस्त्र उतारे और उन्हें उसके पुत्र को दे दिया। फिर हारून पहाड़ पर मन गया। पिछले महायाजकों के जाने और याजकोई के बीतते जाने के साथ ऐसा होता रहा। मसीह की श्रेष्ठ महायाजकाई का **युगानयुग रहता है** शब्दों में दिखाई देता है (आयत 24क); याजक की उसकी बारी कभी खत्म नहीं हुई। भजन संहिता 110:4 की भविष्यद्वाणी इब्रानियों 7:21 में दोहराई गई थी: ''... यू युगानयुग तक याजक है।'' कोई यहूदी याजक युगानयुग याजक नहीं रह सकता था परन्तु मसीह है क्योंकि वह फिर कभी न करने के लिए मुर्दों में से जी उठा था।

आयत 16 दोनों याजकाइयों के अन्तरों को प्रकाशमान करती है, जिसमें एक तो संसारिक या ''शरीरिक'' है और दूसरे में ''अविनाशी जीवन की सामर्थ'' है। आयत 23 बहुत बनाम एक के एक और अन्तर पर फोकस करती है। मसीह के पास आज भी वह सामर्थ है जिसका इस्तेमाल

उसने चंगाई देकर और अन्य आश्चर्यकर्म करके पृथ्वी पर किया था, बेशक सुमसाचार के पक्का हो जाने पर आश्चर्यकर्मों का युग खत्म हो गया (देखें 2:1-4)। मसीह की पृथ्वी की सेवकाई के दौरान उसके आश्चर्यकर्मों की बातें सुनकर आरम्भिक मसीही लोगों का विश्वास मज़बूत होना चाहिए था, जो काफ़ी नहीं होगा। शायद वे हैरान थे कि ''मसीह ने तब से हमारे लिए क्या किया है?'' उन्हें यह समझना आवश्यक था कि विनती करने का वर्तमान काम (आयत 25) उसके पिछले दिखाई देने वाले आश्चर्यकर्मों जितना ही महत्वपूर्ण है।

मसीह **का याजक पल अटल है** (आयत 24ख)। अनुवादित शब्द ''अटल'' *(aparabatos)* है जिसका अर्थ ''अस्तातंरणीय'' है, जो संकेत देता है कि याजकाई किसी दूसरे को कभी नहीं दी जा सकती।[41] यह कल्पना करना भी कि मसीह का रूतबा किसी ''डिनोमिनेशन के संस्थापक या नबी'' को दिया जा सकता है, इस प्रकाश के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता।

यरूशलेम को अन्तिम महायाजक के पद पर इस मज़ाक के रूप में जेलोतेसों द्वारा रखा गया था। वह एक नालायक व्यक्ति था जिसे पता ही नहीं था कि महायाजकाई का अर्थ क्या होता है।[42] उस महायाजक की नालायकी **पूरा पूरा उद्धार कर** सकने की मसीह की क्षमता के बिल्कुल उलट है। उसकी मृत्यु ने उसके महायाजक होने को कम नहीं किया जो कि थोड़ी ही देर के बाद वह सदा के लिए जीवित रहने के लिए मुर्दों में से जी उठा। ''उस पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं होने की'' (रोमियों 6:9)। मसीह के पास महायाजक का वह पद पक्का है और कोई उसकी जगह नहीं ले सकता।

मसीह आंशिक उद्धार कर सकता है क्योंकि वह हमारे महायाजक के रूप में सर्वदा जीवित है। सामर्थ के उसके पिछले प्रदर्शन अब दिखाई नहीं देते हैं परन्तु जो कुछ वह अब करता है वह उस सामर्थ का प्रदर्शन है जिसकी न तो समय में और अनन्तकाल में कोई सीमा है। हमें ऐसा उद्धारकर्त्ता चाहिए जो उद्धार **कर सकता है,** जिसके पास सामर्थ है। मसीह के पास अनन्त मृत्यु से बचान के लिए आवश्यक सामर्थ है। कलवरी पर अपने बलिदान के द्वारा वह आज्ञामानने वालों को पाप के कारण मिलने वाली दण्ड से बचा सकता है (5:8, 9)।

''उद्धार'' के लिए शब्द वर्तमान काल में है; अन्य शब्दों में वह उद्धार करता रहता है। इसी प्रकार से 1 कुरिन्थियों 10:13 में पौलुस ने कहा कि यीशु में किसी भी परीक्षा से बचने का ढंग निकालने (या ''उद्धार करते'') की सामर्थ है। ऐसा वह स्वर्गदूतों के द्वारा कर सकता (1:14), परन्तु मसीह उनके द्वारा काम कर रहा है। अपने जीवन और अपनी महायाजकाई के अटल होने के कारण वह उन्हें जो वफ़ादार रहते हैं पाप की शक्ति से छुड़ाता रहता है। मसीही लोगों को अभी भी ''उद्धार पाने'' की आवश्यकता है।[43] मसीह हमें पिता के पास ऐसे पहुंचा सकता है जैसा कभी पहले सोचा भी नहीं था क्योंकि वह ''तुम्हें ठोकर खाने से बचा सकता है और अपनी महिमा की भरपूरी के सामने मगन और निर्दोष करके खड़ा कर सकता है'' (यहूदा 24)। हमारे लिए उसका निवेदन सहायता क निरन्तर स्रोत है।

NASB के अनुवादकों ने उसकी हद का वर्णन करने के लिए जहां तक वह हमें बचाता है ''सर्वदा'' (*pantelēs*) शब्द को चुना, परन्तु NKJV और ASV में ''सम्पूर्ण तक'' है। मसीह काम को बीच में नहीं छोड़ता बल्कि जब तक हमें उसके सामर्थ की आवश्यकता है वह इसे देता

रहता है। इसी कारण वह हमारे लिए विनती करता है। विनती करने के उसके काम पर पौलुस द्वारा ज़ोर दिया गया (रोमियों 8:33, 34)। हमें इस महायाजक की आवश्यकता है, क्योंकि जैसे उसने कहा, "... बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता" (यूहन्ना 14:6)। यह दावा कि मसीह हमारा विनती करने वाला है पवित्र शास्त्र की महानतम बातों में से एक है।

ब्रूस का मानना था कि रोमियों 8:33, 34 के शब्द "विश्वास के आरम्भिक मसीही अंगीकार की गूंज को को सुनाते हैं, जिसने यीशु की मृत्यु, पुनरुत्थान, राज्यभिषेक और विनती करने वाले के रूप में उसके काम की गवाही दी थी।"[144] निश्चय ही मसीही लोग स्वर्ग में अपनी आवश्यसकताओं की राह देखते हुए ऐसे साथी के होने में आनन्द कर सकते हैं। यशायाह 53:12 में इस काम की भविष्यद्वाणी की गई थी। बड़ी बड़ी अद्भुत आशिषें उन लोगों के लिए रखी गई हैं जो मसीह में परमेश्वर के निकट आते हैं। लेवीय याजकों ने अपने काम के द्वारा इसके होने की सम्भावना पर विचार भी नहीं किया होगा। थके मांदों के लिए विश्राम (मत्ती 11:28–30) है और परमेश्वर के पिता तक जाने के मार्ग का भरोसा है (यूहन्ना 14:6)। कोई और मार्ग दिया ही नही गया है।

अनुवादित शब्द **विनती** (*entugchanō*) इस पत्री में और कहीं नहीं मिलता है; परन्तु आत्मा और मसीह के द्वारा विनती किए जाने के सम्बन्ध में पौलुस ने इसका इस्तेमाल किया है (रोमियों 8:26, 34)। यीशु हमारे लिए वही करता रह सकता है जो उसने यूहन्ना 17:6–26 में प्रेरितों के लिए किया। यह उस से जो हमारे ब्यान से बाहर तड़प को विनती के ईश्वरीय संदेशों में बदलकर आत्मा के हमें परमेश्वर के प्रतियुत्तर का आश्वासन देने से थोड़ा अलग है। यह पुराने नियम के महायाजक द्वारा अपने पापों के दण्ड पाने के लिए आने वाले आधकों के लिए बलिदानों में अपनी विनती जोड़कर "टालने" से मिलाया जा सकता है।[145]

पौलुस और इब्रानियों के लेखक दोनों ने विनती के मसीह के काम को भजन संहिता 110 से जोड़ दिया। यशायाह 53:12 भी मसीह को अपराधियों के लिए विनती करने वाले के रूप में दिखाकर इस अवधारणा का आधार बनता हुआ लगता है।

आयतें 26, 27. यह उपयुक्त था कि हमें परिस्थितियों की आवश्यकता के अनुसार एक **महायाजक** दिया जाता जो पूरी तरह से पाप से स्वतन्त्र हो। उसे **पवित्र** (*hosios*) होना आवश्यक था, जिसका अर्थ है "भक्त, पाक, परमेश्वर को भाने वाला।"[146] यह शब्द "उसी व्यक्ति का चित्रण करता है जो वफ़ादारी और चौकसी के साथ परमेश्वर के प्रति अपने कर्त्तव्यों को निभाता है।"[147] पुराने नियम के याजके लिए पवित्र होना आवश्यक था क्योंकि ऐसा व्यक्ति ही मन्दिर में प्रवेश कर सकता है। उसके लिए मन से शुद्ध होना आवश्यक था न कि केवल उपासना के काम को सही ढंग से करने वाला व्यक्ति। यीशु पाप से बेदाग था और हमें भी वैसे ही होना आवश्यक है। पतरस और पौलुस दोनों ने यीशु को "पवित्र जन" बताते हुए भजन संहिता 16:10 की ओर ध्यान दिलाया (प्रेरितों 2:27; 13:35)। केवल वही उन सभी योग्यताओं को पूरा करता है जिनकी हमें आवश्यकता है। मसीही लोगों के लिए पवित्र होना आवश्यक है, परन्तु इसे हम *केवल* मसीह के द्वारा पा सकते हैं जो हमें "पवित्र करता है" (इब्रानियों 2:11)।

हमारा प्रभु मनुष्य के साथ अपने सब व्यवहारों में **निष्कपट** (*akakos*) या हानि रहित भी है। यीशु ने ईर्ष्या या घृणा से मुक्त जीवन को दिखाया; वह सब के साथ करूणामय और

परोपकारी था। उसने केवल वही किया जो भला था। व्यापारियों को मन्दिर में से निकालकर वह उसे ''शुद्ध कर रहा'' था जो निश्चय ही भला था। उसके काम ने ज़बर्दस्ती से उनकी चोरी की ओर ध्यान दिलाया (यूहन्ना 2:14, 15)। इससे कुछ लोगों ने पश्चात्ताप भी किया होगा।

निर्मल (*amiantos*) शब्द सुझाव देता है कि यीशु में कोई नैतिक अशुद्धता नहीं थी। इस शब्द का इस्तेमाल शरीरिक शुद्धता के लिए किया जा सकता है; याजकों में बाहरी कलंक न होना आवश्यक था। नैतिक शुद्धता का होना इससे भी कितनी बड़ी बात है। शुद्ध होने का अर्थ केवल यह नहीं है कि उसने रस्मी तौर पर शुद्ध होने से अपने आपको दूर रखा, जैसा कि लेवियों के लिए करना आवश्यक था बल्कि यह भी है कि वह पूरी तरह से नैतिक शुद्ध के बिना था। याजक पाप से दुषित होते थे और इस प्रकार वे दुषित थे परन्तु हमारे उद्धारकर्त्ता के लिए दुषण से ऊपर होना **योग्य था**। हमारे जीवन पापियों के जीवनों से अलग होने आवश्यक है; कई बार हमें नैतिकता के साथ साथ स्थान की दृष्टि से भी अलग होना आवश्यक है (2 कुरिन्थियों 6:14—7:1)।

यीशु **पापियों से अलग** था जबकि साथ ही अपने ''भाइयों'' के जैसा था (2:11-18)। वह हमारे निकट है परन्तु साथ ही संसार की बुराई से दूरी भी है। उसने पृथ्वी पर रहते हुए हर प्रकार के लोगों के साथ मेल जोल रखा परन्तु इसके बावजूद वह जीवन के उस ढंग से जिसे ''अंधकार'' बताया जाता है ''अलग'' रहा।[48]

उसके विपरीत कई बार हम अंधकार में फंस जाते हैं। जब हम ने पाप किया हो तो हमें परमेश्वर के सामने अपने पापों को मानकर अपने प्रभु की दया के द्वारा क्षमा मांगनी चाहिए। इस प्रकार से हम यीशु के लहू के द्वारा शुद्ध होते रहकर ''ज्योति में चलना'' जारी रख सकते हैं (देखें 1 यूहन्ना 1:7-10)।

आयत 27 आगे बताती है कि **महायाजकों** के अपने पापों ... **के लिए** बलिदान चड़ाना आवश्यक था जो कि मसीह के लिए नहीं है। प्रायश्चित के दिन महायाजक यह प्रार्थना करता था:

> हे मैंने परमेश्वर, मैंने और मेरे घराने ने, तेरे सामने दुष्टता, अपराध और पाप किया है। हे परमेश्वर उन बुराइयों, अपराधों और पापों को जो मैंने तेरे सामने किए हैं, क्षमा कर दे, मैंने और मेरे घराने ने, जैसा कि तेरे सेवक मूसा की व्यवस्था में लिखा है। ...[49]

यीशु ने कभी ऐसा काम नहीं किया, क्योंकि वह पाप रहित था।

मसीह सचमुच में हमारा ''निर्दोष और निष्कलंक मेमना'' है (1 पतरस 1:19)। उसके द्वारा हमारा छुटकारा इतना बड़ा और अद्‌भुत है कि हम भी पाप से बेदाग हो जाते हैं। वह ''पापियों से अलग'' (आयत 26) किया गया है क्योंकि वह निष्पाप है (4:15)। इसलिए वह किसी भी मानवीय जीव से ऊपर है और उसे स्वर्गों से ऊंचा किया गया है (आयत 26)। वह स्वर्ग के वासियों यानी स्वर्गदूतों से ऊंचा है। यह स्वाभाविक ही है क्योंकि सब कुछ उसके अधीन है (इफिसियों 1:22, 23)। उसके ऊंचा किए जाने में उसका पुनरुत्थान, स्वर्गरोहरण, और महिमा पाना है। ''यह ऊपर तम्बू में हमारे सर्वदा जीवित महायाजक के सर्वश्रेष्ठ सिद्धता को दिखाता है।''[50] वह स्वर्ग में परमेश्वर के साथ राज करता है और इसलिए स्पष्ट रूप में ''स्वर्गों'' से ऊंचा है। अब उसकी स्थिति समझ की सीमाओं से ऊपर है; यानी हम इसे विश्वास से लेते हैं न कि अवलोकन या इस जीवन के शारीरिक अनुभव के द्वारा ''समझ से'' हैं।

हम महायाजक के केवल प्रायश्चित के दिन सेवा करने को विचार करने लगते हैं (आयत 27) परन्तु फिलो ने कहा कि महायाजक "पूरी जाति की ओर से प्रतिदिन प्रार्थनाएं और बलिदान चढ़ाता था। ..."[51] थॉमस हेविट इस आयत के बारे में यह कहकर सही हो सकता है, "लेखक ने केवल महायाजक के वार्षिक बलिदान और याजकों के प्रतिदिन के बलिदानों को मिला दिया है।"[52] हमारे बलिदान के रूप में यीशु की सेवकाई को दोहराए जाने की आवश्यकता नहीं क्योंकि यह "एक ही बार" होनी थी (*ephapax*; 9:12; 10:10) और "एक बार" (*hapax;* 9:28)। इब्रानियों की पुस्तक में यह मुख्य शब्द हैं। मसीह के बलिदान देते रहने का विचार पूरी तरह से नये नियम का उल्लंघन और इसके विरोध में है। पुराने नियम का महायाजक बार बार भेंट लाता था, अपने पापों के लिए भी (लैव्यव्यवस्था 16:6, 11); परन्तु मसीह की भेंट "एक ही बार के लिए" थी। किसी के लिए दूसरों के लिए मरने का विचार यहूदियों द्वारा पहले ही स्वीकार किया जाता था क्योंकि "मकाबियों के समय के शहीदों ने अपने प्राण इस भरोसे के साथ दिए थे कि उन्हें अपने साथी इस्राएलियों की ओर से प्रायश्चित के रूप में स्वीकार कर लिया जाएगा।"[53] यीशु ने **अपने आपको बलिदान** किया जो कि उसके और लेवियों में से साधारण याजकों के बीच एक मुख्य अन्तर था। यह अन्तर पहली बार 7:27 में बताया गया परन्तु इब्रानियों की पुस्तक में आगे इसे विचार से समझाया गया है।

आयत 28. पुराने नियम के **याजकों** में कमज़ोरिया या कमियां होती थीं। मसीह में हमें आदर्श याजकाई मिली है। आयत 28 पिछली दो आयतों का सार है। पुरानी वाचा के याजक और **निर्बल**, पापी और मरनहार होते थे। कुछ तो बेकार और घमण्डी होते थे। मसीह में ऐसी कोई विशेषता नहीं थी; उसने हर मानवीय निर्बलता को और हमारे जैसे स्वभाव को जो पृथ्वी की अपनी सेवकाई के दौरान उस पर थोपा गया था, पर विजय पा ली। "निर्बल" शब्द निर्बलता में किए गए पाप और जानबुझकर किए गए पाप में अन्तर का सुझाव दे सकता है। "जानबुझकर पाप करने वाला महायाजक पद पर बना रहीं रह सकता था।"[54]

भजन संहिता 2:7 और 110:4 की दो मुख्य भविष्यद्वाणियों के विचार यहां इकट्ठे हो जाते हैं क्योंकि मसीह मारा **सिद्ध** है। मूसा की व्यवस्था दिए जाने के बहुत देर बाद लिखा गया भजन संहिता 110:4 कहता है, "यहोवा ने शपथ खाई और न पछताएगा: तू मलिकिसिदक की रीति पर सर्वदा का याजक है।" यह बात इस पर और ज़ोर देती है कि पुराने सिस्टम को बदला जाना था। व्यवस्था और याजकाई दोनों को अलग नहीं किया जा सकता था और यहां दोनों के इकट्ठे ही बीत जाने का संकेत है। **शपथ का वचन जो व्यवस्था के बाद खाई गई** वास्तव में उस व्यवस्था का भाग नहीं था। इस कारण भजन संहिता 110:4 में बताई गई परमेश्वर की शपथ ने मसीह की नई वाचा के लिए रास्ता तैयार करने में सहायता की। "समय की प्रतीत ही मूसा की व्यवस्था के अधीन दी गई याजकाई के वह देने की अस्मर्थता को दिखाती है जिसकी लिए यह दी गई थी।"[55]

आयतें 26 और 28 अभी तक पत्री की मुख्य बातों का सार देती हैं। व्यवस्था के अधीन याजकाई के स्थान पर परमेश्वर के **पुत्र** सिद्ध महायाजक ने जो कभी बदला नहीं जाएगा, ले लेनी थी। अध्याय 7 के तर्क का कुछ भाग आज हमारे लिए अनोखा लग सकता है, परन्तु याद रखें कि लेखक इब्रानियों को लिख रहा था जो मानते थे कि हारून की याजकाई सदा के लिए है। इसने भक्त इब्रानियों को ऐसा संदेश लिखने का साहस दिया।

प्रासंगिकता

पवित्र शास्त्र की व्याख्या करना (7:1, 2)

उत्पत्ति 14:18 बताता है कि मलिकिसिदक ने रोटी और दाखमधु के साथ अब्रहाम का अभिवादन किया। बहुत से आरम्भिक टीकाकार यह देखते हुए कि मलिकिसिदक उन्हीं चीज़ों का इस्तेमाल कर रहा था जिनका इस्तेमाल यीशु ने प्रभु भोज का आरम्भ करने के लिए किया। इन चीज़ों को प्रभु का दृष्टांत बनाते थे। यह पवित्र शास्त्र की हर बात प्रतीक में बदलने के साथ और विचार की सिकन्द्रिया की पाठशाला के अनुसार था। परमेश्वर के वचन को इस प्रकार व्यवहार करना अन्याय है। निश्चय ही बाइबल कुछ रूप और प्रतिरूप, प्रतीक और घटनाएं हैं जो बाद में अवसरों और व्यक्तियों में पूरी होती हैं। परन्तु पवित्र शास्त्र जब ऐसी बात कहता है या उसका संकेत देता है तो उन्हें केवल रूपकात्मक और प्रतिकात्मक ही मानना चाहिए। पतरस ने बपतिस्मे के रूप में पानी के द्वारा नूह के उद्धार का इस्तेमाल किया (1 पतरस 3:20, 21)। पौलुस ने कुरिन्थुस के मसीही लोगों को सबक के रूप में इस्राएल के आरम्भिक इतिहास का इस्तेमाल किया (1 कुरिन्थियों 10:1–12)। पुरानी वाचा के अधीन भेंट किए हर मेमने को परमेश्वर के मेमने को मसीह का रूप कहा जा सकता है (देखें उत्पत्ति 1:29)। इब्रानियों 8:2, 5 पृथ्वी के तम्बू को स्वर्गीय तम्बू का दृष्टांत या रूप बताता है जहां यीशु अब अपनी महायाजकाई का काम करता है।

परन्तु यदि कोई हर शब्द, विचार और घटना को रूप या दृष्टांत के रूप में लेने का प्रयास करे तो जल्द ही वह पवित्र शास्त्र को निरर्थक बना देगा। इसके कोई आश्चर्य की बात नहीं कि कोई कहे, ''आप बाइबल से कुछ भी साबित नहीं कर सकते।'' प्रचार करते और सिखाते हुए हम किसी आयत का अर्थ वह बनाने की कोशिश करने के दोषी न हों जो उसे लिखने का ईरादा नहीं था।

दूसरी ओर हमें यह समझना आवश्यक है कि परमेश्वर के प्रकाशन का हर शब्द महत्वपूर्ण है। एक भी शब्द बेमतलब नहीं है। हर मसीह को पवित्र शास्त्र का चौकस विषलेषक होना चाहिए। मूल भाषाओं से शब्दों के सही सही अर्थ तय करना सहायक हो सकता है। स्वाभाविक ही है कि कई शब्दों और वाक्यांशों की व्याख्या करनी आवश्यक होती है, बिल्कुल वैसे ही जैसे लेखकों ने कई बार शब्द अपने आप से लिए जैसे *ephphatha,* ''खुले रहें'' (देखें मत्ती 27:46; मरकुस 7:34)।

एक बड़ी सभा (7:1–10)

अब्राहम पूर्व के पांच राजाओं को मारकर सदोम और मैदानी नगरों से उनके लूट का माल गाड़ियों या ऊंटों पर लादकर लौटा आता था। सदोम के राजा ने अत्याधिक धन और प्रतिष्ठा देकर नगर की प्रख्यात पदवी देकर उसका सम्मान किया होगा। थका हुआ अब्राहम यरूशलेम के पास रुक गया जहां उसे धर्मी राजा ने मिलकर उसको ताज़गी दी, जिसने अब्राहम 318 सेवकों और लौट रहे बन्दियों के साथ अत्याधिक शिष्टाचार दिखाया। मलिकिसिदक ने उससे कहीं अधिक पाया जो उसने सोचा होगा।

आधुनिक समयों के लिए इस सम्भावित प्रासंगिकता पर विचार करें: आपको जितना इस समय वेतन मिल रहा है उससे अधिक वेतन वाली एक नौकरी की पेशकश की जाती है। नौकरी देने वाला आपको बताता है कि नौकरी आपको मिल गई परन्तु उसमें एक शर्त है। ''मसीही के रूप में आपके जीवन का सबसे पता है और आप इस व्यवसाय की सफलता की गारंटी देने के लिए व्यवहार करते हुए अपने सिद्धांतों के साथ समझौता करना होगा।'' आप उलझन में पड़ जाते हैं और आपको एक प्रोत्साहित करने वाले व्यक्ति की आवश्यकता होती है फिर आपके पक्ष में एक भला और धार्मिक चरित्र आ जाता है; उसकी स्थिति उस से ऊपर है जिसे पाने की आप आशा कर सकते हैं। वह धर्मी और स्पष्टवादी है; वह ऐसा व्यक्ति नहीं है जो निजी लाभ के लिए झूठ बोले। उसकी संगति में रहते और उसके साथ का आनन्द लेते हुए और उसके समर्थन को पाना परीक्षा के दलदल के निकट ताज़ा हवा में सांस लेने जैसा है। आपको जो सही है वह करने की दिलेरी मिलती है और आपको उस पेशकश को ठुकरा देते हैं।

हम में से कितने लोग ऐसा कर सकते हैं? हम सब को मलिकिसिदक के जैसे मित्र की आवश्यकता है। उसने अब्राहम को आराम दिया और उसे दिलेर किया, जैसे यीशु हमारे लिए करता है (इब्रानियों 4:16)।

महत्व के दो नाम (7:1-10)

यहूदियों के लिए नामों का विशेष महत्व होता था। नाम से आम तौर पर व्यक्ति की पहचान के साथ साथ उसके स्वभाव का भी पता चल जाता था। ''मलिकिसिदक'' जिसका अर्थ ''धार्मिकता का राजा'' है विशेषकर मसीहा के लिए प्रतीक का काम करता है। यीशु ''ने धर्म से प्रीती'' रखी (1:9; भजन संहिता 45:6), और वह शान्ति का राजकुमार था (यशायाह 9:6)। मसीह हमारा मेल है (इफिसियों 2:14); हर सच्ची शान्ति उसी से निकलती है। ऐसी शान्ति हम अपनी चिंताओं को उस पर लादकर पा सकते हैं (फिलिप्पियों 4:4-8)। रोमियों 5:1, 2 संकेत देता है कि विश्वास से धर्मी ठहराया जाना उस शान्ति से पहले होता है।

यीशु और मलिकिसिदक दोनों समान हैं, क्योंकि दोनों राजा और याजक हैं। पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों को राजा बलिदान देने में आराधकों के रूप में भाग तो ले सकते थे परन्तु वे याजकों के रूप में उन संस्कारों को कर नहीं सकते थे। हुज़िया ने अपने ही याजक के रूप में काम करने का प्रयास किया था और उसे दण्ड दिया गया था (2 इतिहास 26:16-21)। उसे शाऊल से सबक लेना चाहिए (1 शमुएल 13:2-14; 15:10-35)। यीशु से पहले ''याजक के रूप में कोई राजा नहीं'' का एकमात्र लिखित अपवाद मलिकिसिदक है। बेशक पुरखाओं के युग में और लोग रहे हो सकते हैं जिनकी कहानियां दोहराई नहीं जाती। इब्रानियों के लेखक ने मलिकिसिदक को मसीह की परछाई के रूप में समझा। उसके कारण हम मलिकिसिदक की ओर बड़े आदर और आश्चर्य के साथ पीछे को देख सकते हैं। मलिकिसिदक की तुलना पृथ्वी पर यीशु ने सहीं की गई बल्कि स्वर्ग में परमेश्वर के सनातन और अत्यन्त सम्मानित पुत्र के रूप में की गई है। वह सचमुच में याजक/राजा के पद में अपने कहीं बड़े उत्तराधिकारी से तुलना के योग्य था।

मलिकिसिदक ने अब्राहम को आशीष दी और यीशु ने संसार को आशीष दी। केवल ईश्वरीय सामर्थ ही वास्तव में आशीष दे सकती थी, चाहे परमेश्वर ने पुरखाओं को अपनी संतान

को (उत्पत्ति 9:24–27; 48:15) और याजकों को लोगों को आशीष देने की अनुमति दी (गिनती 6:24–26)। कितनी अद्भुत बात होगी जब यीशु ने बच्चों को आशीष देने के लिए उनके ऊपर हाथ रखे होंगे (मरकुस 10:13–16)! माताओं को जीवनों में याद रहा होगा कि किस प्रकार उन्हें प्रभु ने आशीर्वाद दिया था। ऐसी आशीष के अनुरूप रहने के लिए दी गई ज़िम्मेदारी कितनी बढ़िया थी! हम भी यीशु के द्वारा असीमित आशीष पा सकते हैं और अनन्तकाल तक उन आशिषों का आनन्द ले सकते हैं। मसीह के लिए पृथ्वी पर अपना अन्तिम काम अपने चेलों को आशीष देना विशेष बात थी (लूका 24:50)। स्वर्ग से वह अभी भी ऐसा करता है।

याजक, पुल बनाने वाला

याजक का उद्देश्य क्या है? "याजक" के लिए लातीनी भाषा का शब्द *pontifex* है जिसका मूल अर्थ है "पुल बनाने वाला।" यीशु इस संसार से परमेश्वर की उपस्थिति तक का हमारा पुल बनाने वाला है। उसने एक नया और जीवित मार्ग खोल दिया (इब्रानियों 10:20)। हमारा पिता जो कभी बहुत दूर लगता था अब निकट है। यीशु ने हमारा छुटकारा प्राप्त किया है जो परमेश्वर की उपस्थिति में हमें आत्मा में ले आया है। हम उस तक पहुंचने से डरे न (इब्रानियों 4:15, 16) और उसके और उसके पुत्र के साथ संगति का आनन्द लें (1 यूहन्ना 1:3)।

"परम प्रधान परमेश्वर" (7:1)

प्राचीन संसार के लोगों द्वारा अलग अलग क्षेत्रों के लोगों द्वारा विभिन्न देवताओं की उपासना की जाती थी। स्थानीय देवताओं ने किसी विशेष नगर या ईलाके के लोगों की रक्षा करके उन्हें आशीष देकर अपने होने को साबित किया माना जाता था। "परम प्रधान परमेश्वर" का पद केवल याहवेह के लिए था (उत्पत्ति 14:18; देखें व्यवस्थाविवरण 32:8)।

यह अभिव्यक्ति चाहे बहुत कम मिती है परन्तु पवित्र शास्त्र में विचार हर जगह मिलता है। उसी ने सब कुछ बनाया। परमेश्वर से जिसने नीनवा को बचने में सहायता के लिए उसे आज्ञा दी थी योना ने भी काफिर नाविकों के सामने माना कि परमेश्वर यहोवा ही ने सब कुछ बनाया है (योना 1:9)।

कोई राजा जो अपने आपको विशेषकर शक्तिशाली मानता था "राजाओं का राजा" कहलाना पसन्द करता था। इस्राएलियों को राजाओं के राजा बेहतर पता था और वे परमेश्वर को यह नाम देते थे। कोई भी इससे ऊपर नहीं था और इस्राएलियों को अपने अच्छे दिनों में यह बात याद थी। सच्चे और एक मात्र परमेश्वर से ऊपर कोई और नहीं हो सकता।

महानता का विशलेषण (7:4)

अब्राहम के मुकाबले मलिकिसिदक इतना महान था तो अब्राम को विश्वासियों का पिता क्यों चुना गया? अब्राहम की अपनी कमज़ोरियां थीं परन्तु परमेश्वर और उसके वचन में उसका पक्का भारोसा यानी उसका विश्वास उसकी सबसे बड़ी विशेषता थी। मलिकिसिदक को "परमप्रधान परमेश्वर के याजक" की अपनी सम्माननीय भूमिका में उठाए जाने के लिए ऐसे ही विश्वास होगा।

अब्राहम की एक प्रमुख विशेषता उसका नैतिक चरित्र था। वह अपने बच्चों को अपने पीछे चलने की "आज्ञा" दे सकता था (उत्पत्ति 18:19)। चरित्र की इस शक्ति की इच्छा बहुत से लोगों द्वारा की गई है परन्तु बहुत कम लोगों में इसे देखा गया है। उसका प्रभाव परमेश्वर से प्रेम रखने वालों की कम से कम चौथी पड़ी तक पहुंच गया। (यूसुफ़ क उदाहरण पर ध्यान दें।) यह सम्भव है कि मलिकिसिदक, जिसकी कोई वंशावली नहीं दी गई है की कोई संतान न हो। इस कारण वह प्रभावशाली असर दूसरों पर नहीं डाल सकता था जो अब्राहम ने डाला।

दसवां अंश (7:4-8)

मलिकिसिदक को अब्राहम का उपहार नये नियम की कलीसिया के लिए दसवां अंश देने की आज्ञा नहीं बन जाता। परन्तु जीवन पाकर और पाप की दासता से छूटकर विश्वासी मसीही परमेश्वर के काम के काम के लिए साप्ताहित भेंट अलग रख छोड़ेंगे।

मसीही व्यक्ति के लिए "आमदनी" का कुछ भाग देना आवश्यक है (1 कुरिन्थियों 16:2)। निश्चय ही कोई उदारता से देने वाला तब तक नहीं हो सकता जब तक वह कम से कम दसवां अंश नहीं देता। सुसमाचार के विवरणों के बाद नये नियम में चाहे विशेष रूप में दसवां अंश देने की बात नहीं की गई, परन्तु बलिदानपूर्वक देने के लिए कुछ लोगों की सराहना की गई (देखें 2 कुरिन्थियों 8:1-5)। यीशु ने कहा कि यहूदियों को व्यवस्था के अन्य भागों की उपेक्षा किए बिना अपने दशंमास दिए जाने थे (मत्ती 23:23)। बेशक वह क्रूस से और कलीसिया को स्थापित करने के लिए पवित्र आत्मा के आने से पहले की बात की। तौभी इन आयतों में से निष्कर्ष निकालकर कि स्वीकार्य प्रतिशत दशंमास ही था, हम सही कर सकते हैं।

आज्ञा मानने के लिए परमेश्वर के नियम कभी बदले नहीं थे। दसवां अंश देने की आज चाहे आज्ञा नहीं है, परन्तु इसे एक नियम के रूप में देखा जा सकता है। आज्ञा मानने के पुराने नियम के उदाहरणों को आज भी हम मानते हैं (देखें रोमियों 15:4; 1 कुरिन्थियों 10:1-13)। यीशु ने उस वचन की सही व्याख्या देने के के लिए कि "केवल" शब्द जोड़ते हुए हमें परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए, पुराने नियम में से दोहराया (मत्ती 4:10; देखें व्यवस्थाविवरण 6:13)। कलीसिया द्वारा अपनी आर्थिक सहायता को सही ठहराने के लिए नमूने के रूप में पौलुस ने पुराने नियम के नियमों का इस्तेमाल किया (1 कुरिन्थियों 9:8-10; देखें व्यवस्थाविवरण 25:4)। परन्तु हम बाइबल के अनुसार पवित्र लोगों के रूप में पुराने नियम के किसी भी आज्ञा को ज़बर्दस्ती थोप नहीं सकते जो वर्तमान में लागू होने के रूप में नये नियम में न ठहराई गई हो।

बड़ा पहले आया (7:9, 10)

यहूदियों की दृष्टि में अब्राहम अपनी संतान से अधिक महत्वपूर्ण था क्योंकि वह पहले आया लेवीय अब्राहम के बाद में आया। इसलिए उसे अपने परदादे से कम महत्वपूर्ण माना जाता था। आज हम ऐसे नहीं सोचते हैं; वास्तव में हम यह कल्पना करने लगते हैं कि हमारी पीढ़ी पिछली सब पीढ़ियों से अधिक समझदार है। परन्तु तकनीक हमें नैतिक या आत्मिक रूप में बड़ा नहीं कर देती। उच्च नैतिकता और जीवन के उद्देश्यों को समझना वे विशेषताएं हैं जो लोगों को महत्वपूर्ण बनाती हैं। आधुनिक संसार के सही नज़रीये के लिए हमें अतीत के लिए अति सम्मान

रखना आवश्यक है।

पवित्र शास्त्र हमारी आधुनिक फिलॉस्फियों से वास्तविक मूल्यों के साथ अधिक मेल खाता है। दाऊद ने यह कहते हुए कि "वे तो सोने से और बहुत कुन्दन से भी बढ़कर मनोहर हैं; वे मधु से और टपकनेवाले छत्ते से भी बढ़कर मधुर हैं" (भजन संहिता 19:10)। परमेश्वर की विधियों के अत्याधिक महत्व को समझा था। भजन लिखने वाले ने घोषणा की, "तेरी दी हुई व्यवस्था मेरे लिये हजारों रूपयों और मुहरों से भी उत्तम है" (भजन संहिता 119:72)। सचमुच की महत्वपूर्ण इस बात को समझकर हमारा संसार कितना महत्पूर्ण हो जाए।

परमेश्वर की खामोशी का आदर (7:12-14)

बहुत बार लोग ऐसा करते या सोचते हैं, "चलो कलीसिया में ऐसा करते हैं चाहे पवित्र शास्त्र द्वारा इसे अधिकृत नहीं किया गया है क्योंकि परमेश्वर ने कभी इसे *न* करने को नहीं कहा है।" क्या हो यदि परमेश्वर ने हर उस बात को लिख दिया होता जिसकी वह स्वीकृति नहीं देता है? क्या हो यदि हमें अपने बच्चों के लिए ऐसी ही सूची बनानी हो? वह सूची बहुत लम्बी हो जाएगी और किसी के भी पढ़ने के लिए मुश्किल होगी। जो लोग बाइबल के अधिकार को इस प्रकार से देखते हैं वे ध्यान से सोच नहीं रहे हैं; उनका तर्क केवल मान्यता पर आधारित है। हम यह नहीं मान सकते हैं कि कोई बात स्वीकार्य है क्योंकि पवित्र शास्त्र में उसे विशेष रूप में मना नहीं किया गया है। हमें हमेशा यह पूछना चाहिए, "क्या यह ऐसी बात है जिसे परमेश्वर केव चन के द्वारा अधिकृत किया गया है जो हमें हर भले काम के लिए तैया करता है" (देखें 2 तीमुथियुस 3:16, 17)। कोई भी बात जो स्पष्ट कथन, संकेत या उदाहरण से स्पष्ट रूप में अधिकृत नहीं की गई वह मनुष्य की नई बात ही है।

लोगों ने हर बात में बाइबल के अधिकार की मांग करने वालों को निकालकर मण्डली की आराधना में मनुष्यों की बनाई हुई नई नई बातें शामिल कर ली हैं। एक आम बात कलीसिया की आराधना में गाने के साथ साज़ों का इस्तेमाल है। किसी को भी गाने के साथ साज़ों के इस्तेमाल के लिए अधिकार की बात नहीं हो सकती क्योंकि कलीसिया की आराधना के सम्बन्ध में नया नियम इसके बारे में कुछ नहीं कहता है। पुराने नियम में इसकी आज्ञा थी (2 इतिहास 29:25), परन्तु इतिहासकार मानते हैं कि नये नियम की कलीसिया में सार्वजनिक आराधना में कभी गानेके साथ साज़ों का इस्तेमाल नहीं हुआ।

कलीसिया की आराधना में गाने के साथ साज़ों का इस्तेमाल उन्नीसवीं सदी में अधिकतर प्रोटैंस्टंड मण्डलियों में विवाद की बात थी परन्तु धीरे धीरे अधिकतर डिनोमिनेशनों में इसने अपना रास्ता बना लिया। हम अपने आस पास की जातियों की तरह चीखें नहीं (1 शमुएल 8:5)! साज आम तौर पर उस संगी के रूप की जगह ले लेते हैं जिसकी परमेश्वर ने आज्ञा दी है। कलीसिया की सभा में केवल गाने वाले ही गाने वाले लोग में सिखाने और समझाने की परमेश्वर की आज्ञा का पालन कर रहे थे (इफिसियों 5:19; कुलुस्सियों 3:16)।

7:12-14 में क्या कहने का प्रयास है? "परमेश्वर ने बता दिया था कि कौन सा गोत्र, इस कारण किसी अनाधिकृत गोत्र को स्वीकृति नहीं है।" हमें चाहिए कि जहां बाइबल खामोश है

वहां खामोश रहें। खामोशी का सिद्धांत या अधिकार न होने का नियम पूरी बाइबल में भरा है। यहूदी वादियों के लिए अन्यजाति मसीहियों से खत्ना करने की शर्त रखना गलत था क्योंकि प्रेरितों ने ऐसी कोई "आज्ञा नहीं दी थी" (प्रेरितों 15:24)। प्रेरितों की खामोशी इसे मरना करने के लिए काफ़ी थी।

वचन की अगली प्रासंगिकता पर विचार करें। नूह को गोपेर की लकड़ी से जहाज़ बनाने को कहा गया था, कोई और लकड़ी मान्य नहीं थी और उसने किसी भी और प्रकार की लकड़ी का इस्तेमाल करने का साहस नहीं किया। हमें आज बाइबल के अधिकार को तय करने की प्रक्रिया में वही नियम मानना आवश्यक है। यदि परमेश्वर ने सामान्य शब्द "लकड़ी" कहा इस्तेमाल किया होतो वह किसी भी प्रकार की लकड़ी का प्रयोग कर सकता था। कुछ लोग इस तर्क पर आपत्ति करते हैं। परमेश्वर की खामोशी के लिए आदर का सिद्धांत यहां भी लागू होता है। यदि नये नियम में "कलीसिया में वे *बजाते* थे" शब्दों वाली कोई आज्ञा या उदाहरण होता तो हम जैसा चाहते संगीत इस्तेमाल कर सकते थे। परन्तु आराधना में गाने से सम्बन्धित नये नियम की नौ आयतों में केवल गाने की ही बात है।[56] यह हमें केवल *कैपेला* संगीत जो एक इटैलियन शब्द है जिसका मूल अर्थ "चैपल की शैली में" संगीत के लिए ही अधिकृत हैं। हमें हृदय के एक साज का इस्तेमाल करते हुए परमेश्वर के सामने "लै बनाना" (*psallō*) आवश्यक है (इफिसियों 5:19)।

"हमारा प्रभु" (7:14)

आयत 14 में जिसे "हमारा प्रभु" बताया गया है स्पष्ट रूप में वह यीशु मसीह है। पतरस के ठोस दावे के आधार पर भजन संहिता 110:1 की भविष्यद्वाणी में दूसरा "प्रभु" यीशु को ही बताया गया है (प्रेरितों 2:34, 35)। हमें उसे अपने जीवनों के प्रभु के रूप में मान लेना चाहिए। परन्तु हम उस "प्रभु" के द्वारा पुराने नियम के "यहोवा," परमेश्वर पिता के सामने प्रार्थना करते हैं। यीशु नये नियम का प्रभु है।[57]

इस संसार के सदृश्य न हो कर हमें अपने जीवनों में यीशु को प्रभु बनाना आवश्यक है (रोमियों 12:1, 2)। ऐसा करते हुए हम "परमेश्वर की इच्छा" को *साबित* करने के बड़े लक्ष्य को प्राप्त करते हैं (रोमियों 12:2)। हम अपने आपके और दूसरों के सामने अपने प्रभु की सेवा करने के अद्‌भुत आनन्द को साबित करते हैं। क्या वह हमारे जीवन का प्रभु है? क्या आपने इसे साबित कर दिया है? दूसरों को विश्वास के उचित बचाव द्वारा मसीह तक ले जाने के योग्य होने के लिए हमें "मसीह को प्रभु जानकर अपने अपने मन में पवित्र समझना" और "जो कोई [हम] से [हमारी] आशा के विषय में कुछ पूछे उसे उत्तर देने के लिए सर्वदा तैयार" रहना आवश्यक है (1 पतरस 3:15)। अपने जीवनों के प्रभु के रूप में मसीह के साथ हमें उस शान्ति का पता चलेगा जिसे हम शिद्दत से चाहते हैं। हमें हियाव के साथ जीवन का सामना करने की हिम्मत और हमारा विश्वास कमज़ोर होने पर विजय पाने मिलेगी। यदि पवित्र किया गया मसीह हमारे मनों का प्रभु है तो "बड़ा अनुग्रह" जिसकी हमें आवश्यकता और इच्छा है हमें मिल सकता है (प्रेरितों 4:33)। माप के बाहर अनुग्रह अब भी हमारा भण्डार है।

परमेश्वर के निकट आना (7:19)

हमें परमेश्वर के निकट आने की आज्ञा दी गई है (याकूब 4:8)। वह पहले ही हमारे निकट आ गया है; हम अपने योगदान को करने के अवसर का इनकार न करें। याकूब ने संकेत दिया कि यदि हम उसकी बात को मानें तो वह हमारे और निकट आ आ जाएगा। मत्ती 11:28-30 वाला बड़ा निमन्त्रण हमें मसीह के द्वारा अपने निकट आने का आग्रह करते हुए, परमेश्वर की ओर से दिया गया है। हमें प्रकाशितवाक्य 22:17ख में दी गई आज्ञा को मानना आवश्यक है: ''जो प्यासा हो, वह आए ...।''

कम से कम दो चीज़ें व्यक्ति को परमेश्वर से दूर रखेंगी। पहला तो *पाप* है। हमारे पवित्र परमेश्वर का स्वभाव ही पापी को अपनी उपस्थिति में आने से रोकता है (यशायाह 59:1, 2; प्रकाशितवाक्य 21:27)। मानवीय जीवों को इसकी समझ लगती है। दूसरा *भय* है। अपने मनों पर दोष लेकर परमेश्वर का सामना करने की भीतरी समझ मन में डर पैदा करती है। यशायाह ने अपने आपको ''अशुद्ध होंठों'' वाले पापी के रूप में पहचान लिया जब उसने यहोवा की महिमा देखी (यशायाह 6:5)। जिन लोगों को वचन से समझ आ जाती है कि उन्हें क्षमा मिल गई है वह बिना डर के मृत्यु का सामना कर सकते हैं (इब्रानियों 2:14, 15)। समय के साथ विश्वास भरे मन से व्यक्ति घर जाने और परमेश्वर के साथ होने के लिए पूरी तरह से तैयार हो सकता है क्योंकि उसने उस भय पर काबू पा लिया है और अब अपने स्वर्गीय पिता की निकटता का ईच्छुक है।

खतने का आवश्यक होना (7:21)

गलातियों 5:1-5 और रोमियों 2:25-28 उन यहूदी वादियों के बारे में बताते हैं जिन्होंने अन्यजाति मसीही लोगों पर खतने को थोपने की कोशिश की थी। पौलुस ने यह दिखाते हुए कि तर्कसंगत रूप में कोई यह कहे कि यदि व्यवस्था का एक भाग भी प्रभावी था तो परमेश्वर की ओर से धर्मी ठहराए जाने को पाने के लिए पूरी की पूरी व्यवस्था को मानना, इस काम की निंदा की। इसी प्रकार से यदि व्यवस्था का एक भाग पूरा गया या मिटा दिया गया तो तर्कसंगत रूप में सारी व्यवस्था के साथ यही हुआ। इब्रानियों की पुस्तक यहूदी विश्वासियों को लिखी गई थी। इस कारण खतने के विषय का उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं थी। यह मामला अन्यजाति मसीही लोगों से सम्बन्धित पिछले लेखों में सुलझा लिया गया था।

स्थायी याजकाई (7:21)

परमेश्वर ने शपथ खाई है कि वह नये नियम की याजकाई के विषय में अपने मन को नहीं बदलेगा। यह मसीह के बाद किसी नये ''नबी'' द्वारा बाद के किसी प्रबन्ध के लिए कोई जगह नहीं रहने देता। न ही कोई हारून या मलिकिसिदक की याजकाई को बहाल करके किसी प्रकार धर्मी ठहर सकता है। दो हज़ार वर्षों में पवित्र शास्त्र की शिक्षा नहीं बदली है।

इस सम्बन्ध में ''फिर न पछताने'' की परमेश्वर की योजना एक तरीका बताती है जिसमें उसने अब्राहम को आशीष देते रहना था। चाहे बड़ी बड़ी शारीरिक आशिषें देने का ईरादा था परन्तु सबसे बड़ी आशिष आत्मिक थी। विश्वासियों के पिता के रूप में (देखें रोमियों 4:16)

अब्राहम कलीसिया के द्वारा परमेश्वर की आशिषें प्राप्त करता जा रहा है। इसके विपरीत इस्राएल को दी गई देश देने की सभी प्रतिज्ञाएं या तो बाबुल की दासता से पहले की थीं या उसके दौरान। इस्राएल के लिए बाइबल की काई भी प्रतिज्ञा बिना पूरे हुए नहीं रही है चाहे वह जाति के रूप में या राष्ट्र के रूप में हो, कि चाहे उनका देश उन्हें वापस मिल जाए।

एक दूसरे की जामिनी (7:20-22)

इब्रानियों 7:22 यीशु को नई और श्रेष्ठ वाचा का ''जामिन'' बताती है। यूनानी-रोमी परम्परा किसी के अपना कर्ज़ चुकाने की अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा न कर पाने के मामले में उद्धार लेने वाले के लिए किसी के जामिन बनने की आम प्रथा थी। हमारे जामिन के रूप में यीशु इस बात की गारंटीदेता है कि परमेश्वर के प्रति ज़िम्मेदारियों को पूरा किया जाएगा।

इस आयत का अर्थ यह भी हो सकता है कि यीशु हमें आश्वस्त करता है कि परमेश्वर हमारी ओर अपनी प्रतिज्ञाओं में कमी नहीं रहने देगा। यदि हमने मान लिया कि परमेश्वर हमारे साथ अपना वचन पूरा नहीं कर रहा है तो हम मसीह की ओर आ सकते हैं, जो यह गारंटी देताहै कि हर ईश्वरीय प्रतिज्ञा पूरी की जाएगी। दोनों ही स्थितियों में परमेश्वर की ओर से हमें दी जाने वाली बड़ी आशिषों की गारंटी देने के काम का सुन्दर विचार है।

गारंटी वाली वाचा (7:22)

यीशु उत्तम वाचा की हमारी गारंटी है। पवित्र शास्त्र में गारंटी या जामिन की एक मार्मिक कहानी है। यहूदी ना बिनियामीन के लिए अपने आपको जामिन घोषित कर दिया। उसने अपने पिता को गारंटी दी कि बिनियामी मिस्र से सुरक्षित लौट आएगा (उत्पत्ति 43:8, 9)। यहूदा ने कहा, ''यदि मैं उसको तेरे पास पहुंचाकर तेरे सामने खड़ा न कर दूं, तब तो मैं सदा के लिए तेरा अपराधी ठहरूंगा'' (देखें रोमियों 3:23-26)। यीशु की पेशकश की कितनी बेमिशाल आदि रूप है। एक अर्थ में यीशु ने पिता से कहना था, ''मैं पृथ्वी पर जाऊंगा और इन खोई हुई आत्माओं के लिए जिन से तू प्रिती रखता है, क्रूस पर सबसे शर्मनाक और दर्दनाक मृत्यु कहूंगा।'' मैं गारंटी देता हूं कि मैं दोषियों के लिए निर्दोष के रूप में मरकर छुटकारे का मार्ग निजी तौर पर दूंगा ताकि उन्हें बचाने में तू धर्मी ठहरे। मैं उनके दोष को सदा के लिए अपने ऊपर ले लूंगा'' (देखें रोमियों 3:23-26)। हम परमेश्वर न्याय की शर्तों को कभी पूरा नहीं कर सकते थे, परन्तु मसीह कर सकता था और उसने किया। अब परमेश्वर हमें बचाने में धर्मी ठहर सकता है, जिसकी हमारे लिए अपने प्रेम के कारण उसे तड़प थी (यूहन्ना 3:16)। इस सिस्टम की अनोखी बात यह है कि परमेश्वर द्वारा की गई हर बात धर्मी है। वह अधर्म से काम नहीं कर सकता।

सेवा से अयोग्य ठहरे (7:24, 25)

मलिकिसिद की रीति के अनुसार याजक बनने के लिए योग्य होने के लिए यीशु के लिए आवश्यक था कि वह अत्यंत ऊंचे नैतिक चरित्र वाला हो। सही वंशावली वाले व्यक्ति के लिए याजकाई से ठुकराए जाने के लिए यहूदी व्यवस्था और परम्परा में 142 कारण थे। यह सभी कारण शारीरिक थे और इनका उसके भीतरी स्वभाव या चरित्र के साथ कोई सम्बन्ध नहीं था।

वह कैसा दिखता था, कैसा पहनता था और उसके बाल कैसे थे यह सब अत्यन्त महत्व की बातें थीं। याजक युक्त होने के लिए व्यक्ति को कई रस्मों को पूरा करना आवश्यक होता था।

उन नियमों का बाहरी होना इस सच्चाई को दिखाता है कि व्यवस्था लोगों को परमेश्वर तक लाकर उन्हें पाप से शुद्ध नहीं कर सकती। व्यवस्था के नियम और आराधना देखने, सूंगने, सुनने और छूने के शारीरिक बोद्धों पार आधारित पूरी तरह से बाहरी थे। नरसिंगे फुंकने और महायाजक के सुन्दर वस्त्रों का होना किसी भी प्रकार मनुष्य के मन या आत्मा से उसका कोई सम्बन्ध नहीं था।

कुछ यहूदी मसीही असल बात को छोड़कर परछाईकी ओर लौटना चाहते थे (इब्रानियों 10:1) परन्तु परछाई परमेश्वर के निकट लाने के लिए आराधक योग्य नहीं बना सकती थी। व्यवस्था में इतनी शारीरिक समाएं थीं कि उन्हें मनुष्य की आवश्यकताओं आत्मिक रूप में वे पर्याप्त नहीं थीं। परछाई और असल में अन्तर को न देख पाना कितनी बड़ी त्रासदी है।[58] व्यवस्था मनुष्य के पाप और नाकामी की ओर ध्यान दिला सकती थी परन्तु यह लोगों को उस ऊंचाई तक नहीं उठा सकती थी जिस ऊंचाई तक यीशु उठाता है।

यीशु और हमारी समस्याएं (7:25)

यह ज़बर्दस्त बात है कि यीशु ने पाप, मृत्यु और शैतान की परीक्षाओं की हमारी समस्याओं से निपटा। यह हमारे सामने ही रहती हैं। यदि हम शैतान को हमें परखने दें तो वह हमें परीक्षा में डाले रहता है। हमें अपनी समस्याओं को प्रतिदिन यीशु की ओर मोड़ना आवश्यक है (फिलिप्पियों 4:4-8) जो हमारे लिए विनती करता है। यीशु में हमारा कितना प्यारा दोस्त है; क्या आप प्रतिदिन की प्रार्थनाओं और आज्ञापालन के द्वारा उसके साथ वास्तव में मित्रता बढ़ाने की कल्पना कर सकते हैं? यह एक महिमामय विचार है जो लगभग समझ से बाहर है परन्तु जब हम विश्वास के द्वारा उससे सहयोग करते हैं तो ऐसा हो सकता है (1 पतरस 1:3-5)। अपने जीवनों में मसीही अनुग्रहों को जोड़ने की प्रक्रिया अब और पूर्ण रूप में उद्धार का पूरा आश्वासन देती है (देखें 2 पतरस 1:5-11)। मसीह हमारे समकालीन के रूप में रहता है, नहीं तो वह हमोर मध्यस्थ और हमारे महायाजक के रूप में काम नहीं कर सकता था।

यीशु हमारी पाप की समस्या में हमारी सहायता करता है पर हम ज्ञान और विश्वास में बढ़ने के प्रयास के बिना पाप की इच्छा पर काबू नहीं पा सकते (1 पतरस 2:1-3; 2 पतरस 3:18)। अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा हमें "अनुग्रह जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे" (इब्रानियों 4:16), परन्तु यह परीक्षा में से निकलने के राह को ढूंढ़ने की हमारी इच्छा को खत्म नहीं कर देता (1 कुरिन्थियों 10:13)।

कुछ लोग अपनी पापपूर्ण जीवन शैली के लिए कहते हैं, "यह तो मेरा स्वभाव है। मैं बदल नहीं सकता।" पौलुस ने कहा कि कुछ बुरे से बुरे पापी भी बदल गए थे (1 कुरिन्थियों 6:9-11)। यदि कुरिन्थुस के लोग कामूक इच्छाओं और लालच की अनैतिकताओं से बचाए जा सकते थे तो कौन कह सकता है कि आज कोई बदल नहीं सकता है। शैतान झूठ बताता है ताकि लोगों को निराशा में ले जाए यीशु आशा देता है और हमें निराशा से बचाता है।

हो सकता है कि हम बार बार पाप करें, परन्तु यह धारणा कि यीशु ने फिर से अपना लहू दे

दिया या क्रूस पर अपने दुख की बात पिता को याद दिलाई मनघडंत बात है जो इस वचन के द्वारा झूठी ठहरती है। यह विचार पृथ्वी पार ''मास'' भेंट करने को उचित ठहराने की कोशिश करता है। परन्तु यह बाइबल का विचार नहीं है। अपनी स्वेच्छिक मृत्यु में दिखाया गया कि यीशु का अपने आप का इनकार सदा के लिए एक ही बार किया जाने वाला कार्य था (इब्रानियों 9:27, 28)। पिता के साथ उसका सम्पर्क सीधा है परन्तु परमेश्वर को यीशु के बलिदान को याद दिलाने की वैसे आवश्यकता नहीं है जैसे मनुष्यों को होती है।

निष्पाप याजक (7:26)

कर्मकांडी कलीसियाओं में विशेष याजक होते हैं। जो उनके लिए जो अपने पापों का अंगीकार करते हैं परमेश्वर के सामने जाने का तर्क देते हैं। जब हम पाप करते हैं तो हमें दोषयुक्त मानवीय याजक के सामने अंगीकार करने की आवश्यकता नहीं है। हम जो मसीह में हैं और उसके द्वारा पिता तक पहुंचते हैं हमें यह आश्वासन मिला है कि हमारे महायाजक पर निसंदेह भरेसा किया जा सकता है। वह शुद्ध और पवित्र है। वह हमारे भरोसे और विश्वास का हक्कदार है और उसके पास पूरी तरह से छुड़ाने की शक्ति है। उस काम के लिए कोई भी मनुष्य पर्याप्त नहीं है।

मसीह ''निष्कलंक है'' उसकी पेशी कितनी अन्यायपूर्ण थी! न्यायाधिषों ने उसे परमेश्वर की निंदा के आरोप पर दोषी घोषित कर दिया। उसके निर्दोष होने को मानने वाला पिलातुस अपवाद था (लूका 23:4, 13–16, 22); परन्तु उसने राजनैतिक सुविधा के आगे घुटने टेक दिए। यीशु ने हमारा दोष अपने ऊपर ले लिया और अपनी मृत्यु के द्वारा हमें आत्मिक चंगाई दिलाई (1 पतरस 2:22–24; 3:18)। यह ''धर्मियों'' के लिए ''धर्मी'' का मरना था। उसका चरित्र हर प्रकार से शुद्ध है।

अलग, फिर भी मित्र? (7:26)

अपने जीवन और चरित्र में यीशु पूरी तरह से भिन्न और ''पापियों से अलग'' था। इसके साथ ही हमारे लिए अपने लगाव के कारण उसने पापियों का मित्र होने के लिए अपने आपको साबित करने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी। उस पर उपहासपूर्ण ढंग से ''महिसूल लेने वालों और पापियों के साथ खाने'' का आरोप लगाया गया (मत्ती 9:11), जो उसके विरोधियों को खतरनाक बात लगी। यीशु ने आरोप से इनकार नहीं किया; वास्तव में उसने कहा कि उनके साथ सम्पर्क करना ही वह उद्देश्य था जिसके लिए वह संसार में आया था (मत्ती 9:12, 13)। उस पर उनके जैसा होने और यहां तक कि उनकी संगति के कारण पियकड़ तक होने का आरोप लगाया गया (मत्ती 11:19)।

हमें भी पापियों के मित्र होना आवश्यक है। परन्तु इतने नहीं कि हम उनके बुरे कामों के आदि बन जाएं। हम यीशु के जैसे नहीं हैं; हम बुराई की संगति में अपने आपको डालकर परीक्षा में पड़ सकते है। हो सकता है कि हम अपने भक्तिपूर्ण प्रभाव के साथ समूह की वैसे अगुआईन कर सकें जैसे मसीह कर सकता था। एक बार एक जवान जिसे मैं जानता था सेवकाई के लिए परशिक्षित होने केलिए मसीही कॉलेज में चला गया। वह एक बड़ा अच्छा वक्ता बन गया। बाद

में मैंने उसे सुना, जब वह अपनी बातों से छात्रों को ''रोमांचित कर रहा था। उसने यह सोचते हुए कि वह उन्हें मसीह में मसीह तक ले जा सकता है वे वेश्याओं के साथ कॉफ़ी पीने रात को जाने की बात बताई। मैंने मन में सोचा, ऐसे काम के लिए तू बहुत छोटा है। तू अपने परिवार और अपनी आत्मा को जोखिम में डाल रहा है।'' उएसके बाद मैंने उसके बारे में सुना कि उसका और उसकी पत्नी का तलाक हो गया है। वह बहुत अधिक ''पापियों का मित्र'' बनना चाहता था और उसने अपने आपको हानि के मार्ग पर डाल दिया। हमें सुझबुझ का इस्तेमाल करना अवश्यक है। हमें ''बुराई से भागना'' और कई बार उन लोगों से जो उसमें लगे हुए होते हैं भी भागना आवश्यक होता है (1 कुरिन्थियों 6:18)। परमेश्वर सचमुच में परिक्षा से निकलने का मार्ग देता है (1 कुरिन्थियों 10:13) परन्तु तब नहीं जब हम इसकी ओर भागते हैं परन्तु तब जब हम इससे भागते हैं।

लंगर को पकड़े रखें

यदि हम वचन से भटकने लगें (2:1-4) तो हम भी *वचन* करने लगेंगे (3:7—4:13)। इससे पहले कि देर हो जाए जल्द ही हम *वचन पर रूची न देकर* (5:11—6:20) आलसी विश्वासी बन जाएंगे। भटकने से बचने का बेहतरीन ढंग *लंगर को पकड़े रखना* है।

टिप्पणियां

[1]रेमंड ब्राउन, द *मैसेज ऑफ़ हिब्रूज़: क्राइस्ट अबव ऑल,* द बाइबल स्पीक्स टुडे (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1982), 129. [2]वही, 127. [3]ऑर्थर डब्ल्यू. पिंक, *ऐन एक्सपोज़िशन ऑफ़ हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1954), 356. [4]केन्नथ सेमुएल वुएस्ट, *हिब्रूज़ इन द ग्रीक न्यू टैस्टामेंट फ़ॉर द इंग्लिश रीडर* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1951), 127. [5]गरेथ एल. रीस ने सुझा दिया कि यहां व्याख्या हो सकती है। (गरेथ एल. रीस, *ए क्रिटिकल एंड एक्सजेटिकल कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* [मोबर्ली, मिजोरी: स्क्रिप्चर एक्सपोज़िशन बुक्स, 1992], 104.) [6]''पुरखा'' (*patriarchēs*; देखें आयत 4) शब्द उस समय का सुझाव देता है जब परमेश्वर पिताओं से जो उसके पीछे चलने के इछुक थे, उन्हें अपने परिवारों व अन्य लोगों के लिए याजकों का काम करने के योग्य बनाकर उनके साथ व्यवहार किया। परमेश्वर ने कई धर्मी पिताओं के साथ या जिन्होंने धर्मी बनना चाहा, व्यवहार किया और उसने कइयों पर सच्चाई प्रकट की। [7]फिलियो *ऑन इंकननेस* 14. [8]रॉबर्ट मिलिगन, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़,* न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (सिनसिनाटी: चेज़ एंड हॉल, 1876; रिप्रिंट, नैशविल्ल: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1975), 249. [9]जोसेफस *लाइफ* 1. [10]मोसेज स्टुअर्ट, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (लंदन: विलियम टेग्ग एंड कं., 1856), 391.

[11]यह बात कि परमेश्वर ''सब से ऊंचा'' है कम पद वाले किसी और परमेश्वर के लिए लागू नहीं होता। [12]कई देश युद्ध की लूट के माल का दसवां भाग देते थे। रीस ने यह अनुमान लगाया कि यह प्राचीन परम्परा पमेश्वर की मूल आज्ञा से ज़बानी आगे सौंपी गई होगी। (रीस, 104, एन. 8.) ऐसे दसमांश की चर्चा एफ. एफ़. ब्रूस, द *एपिस्टल टू द हिब्रूज़,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1964), 140, और क्रेग आर. कोस्टर, *हिब्रूज़: ए न्यू ट्रांसलेशन विद इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द एंकर बाइबल, अंक 36 (न्यू यॉर्क: डबलडे, 2001), 343-44 में भी है। [13]इस्राएली लोग लेवियों को दसमांश देते थे, जो आगे याजकों को ''दसमांश का दसमांश'' देते थे (7:5)। दसमांश पर पुराने नियम की व्यवस्था लैव्यव्यवस्था 27:30-33; गिनती 18:21, 24, 26-29; व्यवस्थाविवरण 12:17-19; 14:22; 26:12-14 में मिलती है। याजक और लेवी एक ही नहीं थे (लूका 10:31, 32; यूहन्ना 1:19)। [14]फिलिप एजकुम्ब ह्यूज, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल*

टू द हिब्रूज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 251, एन. 7. [15]''आशीष'' शब्द का इस्तेमाल ''धन्यवाद देने'' के अर्थ में किया जाता था जैसे यीशु ने भोज के कटोरे और रोटी के साथ किया जहां ''आशीष'' और ''धन्यवाद'' एक दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किए गए लगते हैं (मत्ती 26:26; लूका 22:19)। [16]डोनल्ड गुथरी, *द लैटर टू द हिब्रूज़ः ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1983), 159. [17]जेम्स थॉम्पसन, *द लैटर टू द हिब्रूज़,* द लिविंग वर्ड कमैंट्री (ऑस्टिन, टैक्ससः आर. बी. स्वीट कं., 1971), 99. [18]नील आर. लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडेः ए कमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः बेकर बुक हाउस, 1976), 140. [19]स्टुअर्ट, 396. [20]अलबर्ट बार्नस, *नोट्स ऑन द न्यू टैस्टामेंटः हिब्रूज़ टू ज्यूड* (लंदनः ब्लैकी एंड सन, 1884–85; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः बेकर बुक हाउस, 1985), 159.

[21]कोस्टर, 354. [22]''उस [लेखक] के लिए याजकाई हर बात का आधार थी'' (नील आर. लाइटफुट, *एवरीवन 'स गाइड टू हिब्रूज़* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः बेकर बुक्स, 2002], 95)। [23]ब्रूस, 145. [24]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन हिब्रूज़* (ऑस्टिन, टैक्ससः फ़र्म फ़ाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1971), 157. [25]वाक्यांश के विभिन्न रूप मत्ती 1:1; 9:27; 12:23; 15:22; 20:30, 31; 21:9, 15 (मत्ती 22:45; 10:47, 48; 12:35; लूका 1:32; 18:39 भी देखें) में इस्तेमाल हुए हैं। [26]ह्यूजस, 259. [27]डोनल्ड ए. हैग्नर, *एनकाउंटरिंग द बुक ऑफ़ हिब्रूज़ः ऐन एक्सपोज़िशन,* एनकाउंटरिंग बिब्लिकल स्टडीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः बेकर अकेडमिक, 2002), 102. [28]मिलिगन, 260. [29]ह्यूज़स, 264. [30]मिलिगन, 261.

[31]जेम्स मैकनाइट, *ए न्यू लिटरल ट्रांसलेशन, फ्रॉम द ओरिजिनल ग्रीक ऑफ ऑल द एपोस्टोलॉजिकल एपिस्टल विद ए कमैंट्री एंड नोट्स* (एडिनबर्गः बाय द ऑथर, 1795; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः बेकर बुक हाउस, 1984), 539. [32]ब्रूस, 148. [33]NASB में (7:18) में ''व्यर्थता'' थोड़ा कठोर लगता है, क्योंकि व्यवस्था ने उस उद्देश्य को पूरा किया जिसके लिए यह दी गई थी यानी इसने पाप की प्रकृति की ओर संकेत किया। परन्तु अनन्त उद्धार सीधे दिलाने के लिए यह ''व्यर्थ'' थी। [34]रे सी. स्टेडमैन, *हिब्रूज़,* द IVP न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोयः इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 82–83, एन. परमेश्वर को पापी को धर्मी के रूप में दिखाने का काम बलिदान नहीं बल्कि आराधक के मन का व्यवहार करता था, परन्तु यह भी पाप के लिए अन्त में मसीह की मृत्यु को ध्यान में रख कर कहा गया था। [35]मैकनाइट, 539. [36]गुथरी, 165. [37]लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे,* 145. [38]ब्राउन, 134. [39]जोसेफस *एन्टिक्विटीज़* 20.10.1. [40]जोसेफस *अगेंस्ट अपियन* 1.22.

[41]विलियम बार्कले, *द लैटर टू द हिब्रूज़,* 2रा संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फियाः वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1957), 87. [42]जोसेफस *एन्टिक्विटीज़* 20.10.1; *वार्स* 4.3.7–8. [43]रीस, 119. [44]ब्रूस, 154. [45]यहां प्रयुक्त वर्तमान भाववाचक का अर्थ है कि वह विनती करता रहता है। (लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे,* 146–47.) [46]वाल्टर ब्राउर, *ए ग्रीक–इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 2रा संस्क., संशो. विलियम एफ़. अर्ंट एंड एफ़. विल्बर गिंगरिक (शिकागोः यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1957), 589. [47]बार्कले, 89. [48]बाइबल आत्मिक ''अन्धकार'' के हवालों से भरी पड़ी पड़ी है (लूका 1:79; 22:53; यूहन्ना 1:5; 3:19; 8:12; 12:35, 46; प्रेरितों 26:18; रोमियों 2:19; 13:12; 2 कुरिन्थियों 6:14; इफिसियों 5:8, 11; 6:12; कुलुस्सियों 1:13; 1 थिस्सलुनीकियों 5:4, 5; 1 पतरस 2:9; 1 यूहन्ना 1:6; 2:8, 9, 11)। [49]*मिशनाह योमा* 3.8. [50]ह्यूजस, 275.

[51]फिलियो *स्पेशल लॉस* 3.131. [52]थॉमस हेविट, *द एपिस्टल टू द हिब्रूज़ः ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1960), 127. [53]ब्रूस, 158–59. ऐसी भावनाएं 2 मक्काबियों 7:37–40; 4 मक्काबियों 6:27–30; 17:22; 18:3, 4 के अप्रामाणिक लेखों में व्यक्त की गई हैं। [54]साइमन जे. किस्टमेकर, *एक्सपोज़िशन ऑफ़ द एपिस्टल टू द हिब्रूज़,* न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः बेकर बुक हाउस, 1984), 208. [55]ह्यूजस, 279. [56]मत्ती 26:30; मरकुस 14:26; प्रेरितों 16:25; रोमियों 15:9; 1 कुरिन्थियों 14:15; इफिसियों 5:19; कुलुस्सियों 3:16; इब्रानियों 2:12; याकूब 5:13. [57]प्रेरितों 2 के बाद ''प्रभु'' शब्द आमतौर पर यीशु मसीह के लिए ही हुआ है। हमारा सचमुच में ''एक ही प्रभु'' है (इफिसियों 4:5)। [58]इस विचार का सुझाव जेम्स टी. ड्रेपर, जूनि., *हिब्रूज़, द लाइफ दैट प्लीज़स गॉड* (व्हीटन, इलिनोयः टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1976), 194–96 में दिया गया था।